मई 2002
Rs. 10/-
चन्दामामा

क्या आप जानते हैं की भारत में चावल की ५०,००० किस्में हैं?

इनके लिए तथा ऐसी और अधिक जानकारी के लिए पढ़िये

वसुधा

जीव विविधता पर १६ पृष्ठ का एक विशेष परिशिष्ट
चन्दामामा के जून २००२ अंक के साथ

खेल रूपक प्रश्नोत्तरी गतिविधियाँ कहानियाँ

Sponsored by

NATIONAL FOUNDATION FOR INDIA

जीव विविधता - प्रेमी बनना सीखें !
५ जून को विश्व पर्यावरण दिवस अंकित करने के लिए।

A

B

C

D

E

F

G

H

I

J

K

L

M

N

O

P

Q

R

S

T

V W

HTA 5879 2001

सम्पुट - १०६ मई - २००२ सञ्चिका - ५

विशेष आकर्षण

देवी माँ

१९

जंगल के पास अनोखा मेज़बान

२५

माया सरोवर

११

बलवान और बेवकूफ़ पिशाच

३८

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of
Chandamama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

इस पत्रिका में विज्ञापन देने हेतु कृपया सम्पर्क करें

चेन्नई
फोन : 044-234 7384
234 7399
e-mail : advertisements@chandamama.org

दिल्ली
मोना भाटिया
फोन : 011-651 5111
656 5513/656 5516

मुम्बई
शकील मुल्ला
मोबाइल : 98203-02880
फोन : 022-266 1599
266 1946/265 3057

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

शान्ति की विजय हो !

भारत विश्व के छः मुख्य धर्मों में से चार - हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिक्ख धर्म की जन्म भूमि है। ईसाई धर्म भारत में पहली शताब्दी में आया और हमारी भूमि पर फला-फूला। इस्लाम का आगमन पाँच शताब्दियों के बाद हुआ और उस धर्म के अनुयायी भारतवर्ष पहले तो व्यापारी और पर्यटक के रूप में, पर बाद में, आक्रामक और विजेता के रूप में आये। मुस्लिम पाँच शताब्दियों तक हमारे शासक भी रहे। उनमें सबसे महान सम्राट अकबर ने 'दीन इलाही' यानी भागवत धर्म का प्रचार किया, जिसके अनुसार प्रत्येक को अपनी रुचि के अनुकूल धर्म के चुनाव की स्वतंत्रता थी। इसी के शासन-काल में सिक्ख धर्म का जन्म हुआ।

भारत के सभी लोग आजादी की लड़ाई में एक व्यक्ति की तरह उठ खड़े हुए। दुर्भाग्यवश, आजादी मिलने से पहले ही धर्म के नाम पर देश का बँटवारा हो गया। भारत और पाकिस्तान के बीच कई युद्ध हुए, लेकिन वे क्षेत्रीय अधिकारों के लिए थे। हमारे नेताओं ने धार्मिक बन्धुत्व की बात की और देश को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित करने के लिए संविधान का संशोधन किया। जो भी हो, स्वतंत्रता के ५५ वर्षों के बाद भी धर्म के रक्षकों के बीच की लड़ाई मन्द नहीं पड़ी है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि दोषी कौन है। जो भी हो, हाल की घटनाओं से, जहाँ कितने ही निर्दोष लोगों के प्राण चले गये, शर्म के मारे हमारे सिर झुक जाते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी अहिंसा के समर्थक थे और हम सब उनके अनुयायी होने का दावा करते हैं।

चन्दामामा ने अपने पृष्ठों के माध्यम से धर्मों के शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के संदेश का प्रचार किया था। हम केवल यही कह सकते हैं कि धार्मिक शत्रुता के कर्त्ताओं पर ज्ञान का प्रकाश उतरे, और शान्ति की विजय हो !

सम्पादक : *विश्वम*

Visit us at : http://www.chandamama.org
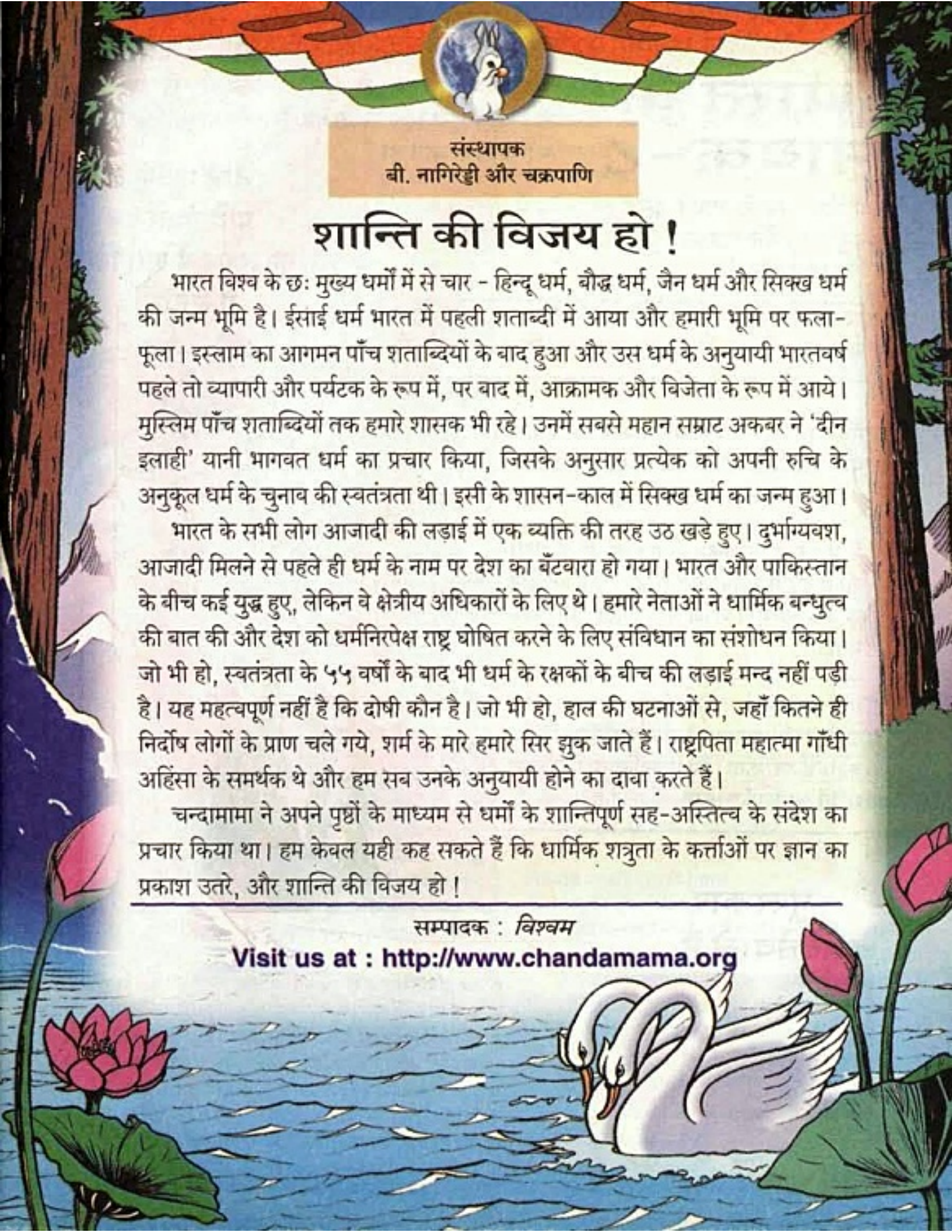
'हीरोज़ ऑफ इंडिया' प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रविष्टि भेजें और आश्चर्यजनक पुरस्कार जीतें।

भारत के नायक-८

भारतीय इतिहास के पृष्ठ नायकों से भरे पड़े हैं। यहाँ तुम कितने ऐतिहासिक नायकों को पहचान सकते हो?

तीन सर्वशुद्ध प्रविष्टियों पर पुरस्कार में साइकिलें दी जायेंगी।

1. मैं सोलह वर्ष की आयु में ईसवी सन् ६०६ में थानेश्वर का राजा बन गया। मैंने परोपकारी और दानी बनने का भरसक प्रयास किया। मैं कौन हूँ?

----

2. विजयानगर साम्राज्य का मैं सबसे बड़ा शासक माना जाता हूँ। मैंने ईसवी सन् १५०९ से १५२९ तक राज्य किया। बताओ, मैं कौन हूँ?

----

3. मैंने स्वयं को मराठा साम्राज्य का शासक घोषित किया और रायगढ़ में मुझे 'छत्रपति' की उपाधि दी गई। बता सकते हो मेरा नाम?

----

4. मैं मेवाड़ का राजकुमार था। मैंने हल्दी घाटी की लड़ाई में सम्राट अकबर द्वारा पराजित होने पर भी आत्म-समर्पण नहीं किया। मेरा नाम बताओ।

----

5. मुझे पल्लव वंश का सबसे बड़ा शासक माना जाता है। मैंने चालुक्य के राजा पुलकेसिन द्वितीय को पराजित किया। मैंने महाबलिपुरम में एकाश्म मंदिरों का निर्माण किया। मैं कौन हूँ?

प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान को स्पष्ट अक्षरों में भरें। इन पाँचों में से आपका प्रिय आदर्श नायक कौन है? और क्यों? दस शब्दों में पूरा करें

मेरा प्रिय आधुनिक नायक .... है,

क्योंकि ....

प्रतियोगी का नाम: ....

उम्र: .... कक्षा: ....

पूरा पता: ....

....

पिन: .... फोन: ....

प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ....

अभिभावक के हस्ताक्षर: ....

इस पृष्ठ को काटकर निम्नलिखित पते पर ५ जून से पूर्व भेज दें-

हीरोज़ ऑफ इंडिया प्रश्नोत्तरी-८
चन्दामामा इन्डिया लि.
नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी
ईक्काडुथांगल, चेन्नई-६०० ०९७.

निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए है।
२. सभी भाषाओं के संस्करणों से इस प्रतियोगिता के लिए तीन विजेता चुने जायेंगे। विजेताओं को समुचित आकार की साइकिल दी जायेगी। यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टियाँ अधिक हुई तो विजेता का चुनाव 'मेरा प्रिय नायक' के सर्वश्रेष्ठ विवरण पर किया जायेगा।
३. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा।
४. इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जायेगा।
५. विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा।

पुरस्कार देनेवाले हैं

HEY PEOPLE! TELL US HOW CLOSE YOU'RE TO POPEYE AND YOU COULD WIN A POPEYE WATCH FROM DASH!

SPINACH

Put your knowledge on Popeye to test by ticking the right answers to the following questions and you could win an exciting Dash! watch.

1. What does Popeye do for a living? He's a
   a. Sailorman ☐ b. Tailorman ☐
   c. Cobblerman ☐

2. What's Popeye's source of strength?
   a. Roast Beef ☐ b. Hotdogs ☐
   c. Spinach ☐

3. What's Popeye's girlfriend's name?
   a. Olive Oyl ☐ b. Coconut Oyl ☐
   c. Sunflower Oyl ☐

Now dash this contest form to:
The Dash! Chandamama Contest,
Titan Industries Ltd, Airport Road,
Bangalore-560 017.

My name is: ____________
I am a Boy☐ Girl☐. I am ______ years old
My address is: ____________

____

Tel: ____________
I read Chandamama in English ☐ Hindi ☐
Others ☐ (Please specify) ____________

Rules and regulations:
1. Judges decision is final and binding.
2. Incomplete forms will not be considered.
3. Prizes are not exchangeable in lieu of cash.
4. All entries should reach us by 15th May 2002.

Rs. 295 onwards.

Wow watches from Titan
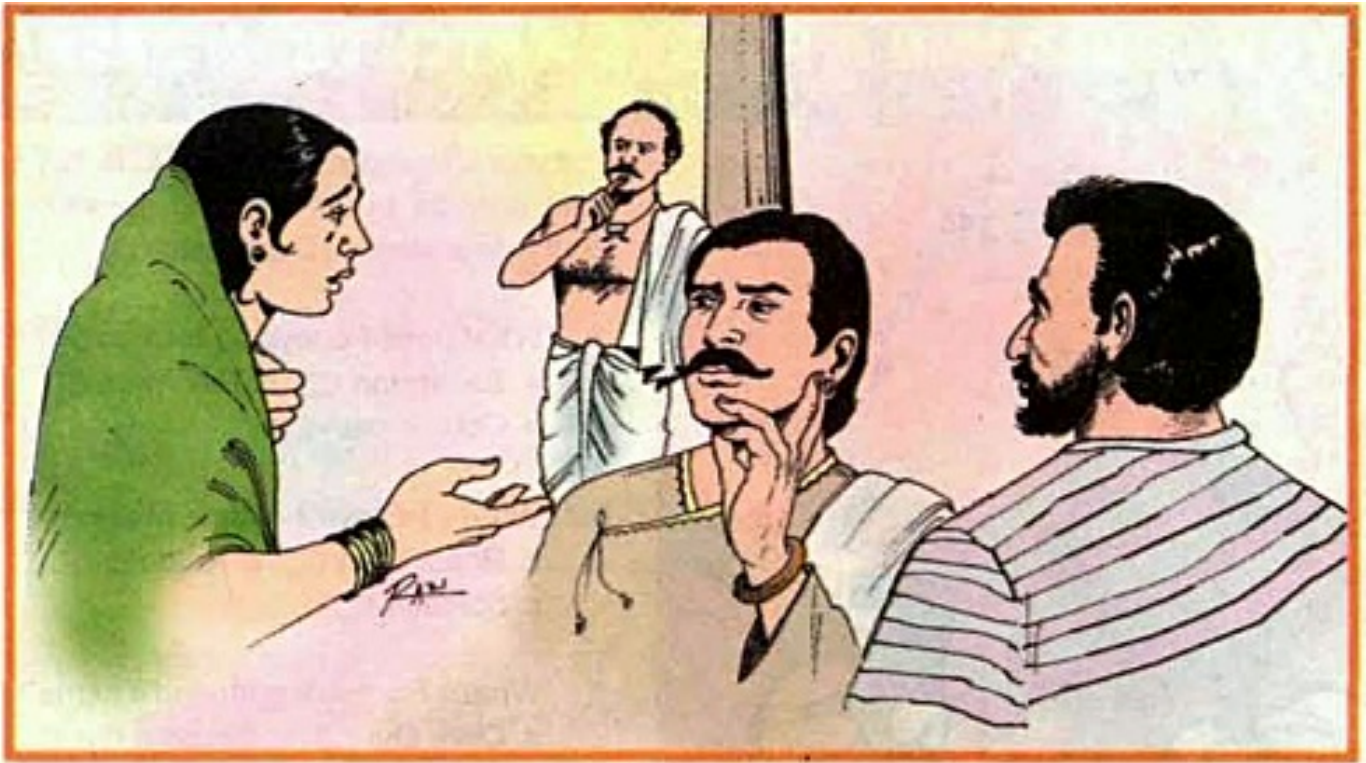
मुफ़्त की सलाह

सदाशिव के लिए उसके माँ-बाप ने काफ़ी जायदाद छोड़ रखी थी। इसलिए वह अपनी पत्नी और संतान के साथ आराम से समय गुज़ार रहा था।

जब कोई जटिल समस्या उठ खड़ी होती तो ग्रामाधिकारी सहित लोग उसके पास आते और उससे सलाह माँगते थे। पूरी तरह से विषय की जानकारी के बाद वह समस्या का हल बतलाता था। इस प्रकार उसने कितने ही लोगों की सहायता की।

ऐसे लोगों में से सूरदास भी एक था। वह व्यापारी था। एक बार अनाज के उसके बोरे पानी में भीग गये थे। वह रोता-बिलखता सदाशिव के पास आया। सदाशिव ने उसे बताया, ''चित्रपुर गाँव के लोग उसनी चावल को उपयोग में लाते हैं। वहाँ यह बेच दो।''

सदाशिव की सलाह के अनुसार काम करने से सूरदास को सौ अशर्फ़ियों का फ़ायदा हुआ। एक और बार सूरदास ने एक धनिक के लिए वज्रों का हार बनवाया। पर वह हार धनिक को पसंद नहीं आया। उसने अपना दुखड़ा सदाशिव को सुनाया तो उसने सलाह दी, ''रत्नपुर के ज़मींदार को नये-नये प्रकार के हारों को इकट्ठा करना बहुत पसंद है। वे तुम्हारा हार सिर्फ़ खरीदेंगे ही नहीं बल्कि तुम्हें एक अच्छी भेंट भी देंगे।'' सदाशिव की सलाह सूरदास को सही लगी। इससे उसे दो हज़ार अशर्फ़ियों का लाभ हुआ।

एक दिन बीस साल का एक अनाथ युवक सूरदास के घर आश्रय माँगने आया। उसका नाम था चंद्र। पर लोग कहा करते थे कि चंद्र धोखेबाज़

- शिवानंद -

है। ऐसे तो उसे एक आदमी की ज़रूरत थी, फिर भी सूरदास उसे घर में रखने में हिचकिचा रहा था। उसने इस विषय में सदाशिव से सलाह माँगी। उसने कहा, ''कोई भी मनुष्य जन्म से बुरा नहीं होता। तुम उसका विश्वास करोगे तो वह भी विश्वासपात्र बन जायेगा।''

उसनें चंद्र को घर में रख लिया। पर एक दिन चंद्र ने दो हज़ार अशर्फ़ियों की चोरी की और घर से भाग गया।

सूरदास आग बबूला होता हुआ सदाशिव के पास आया और कहने लगा, ''तुम्हारे कहने पर मैंने चंद्र को घर में रख लिया। इस वजह से मैंने दो हज़ार अशर्फ़ियाँ खो दीं। तुम्हें मुझे हरजाना चुकाना होगा।''

सदाशिव ने चिढ़ते हुए कहा, ''सलाह देना मात्र मेरा काम है। फल तुम्हारे आचरण पर निर्भर रहता है। यदि तुम सचमुच उसका विश्वास करते, तो वह तुम्हें धोखा नहीं देता।''

''मैंने सोचा, तुम मुझे सही सलाह दोगे। पर तुमने मुझे ग़लत सलाह दी, इसके कारण मुझे दो हज़ार अशर्फ़ियों का नुक़सान हुआ। तुम्हें मेरा यह नुक़सान भरना होगा। अगर ऐसा नहीं करोगे तो ग्रामाधिकारी से शिकायत करूँगा,'' सूरदास ने कहा। पर सदाशिव ने उसकी बातों की कोई परवाह नहीं की। अब बात ग्रामाधिकारी तक पहुँच गयी।

ग्रामाधिकारी की समझ में आ गया कि आख़िर बात क्या है। सूरदास की बातों का विश्वास किया जाए और उसकी सहायता की जाए तो सदाशिव आगे से किसी को भी मुफ़्त में

सलाह नहीं देगा। इसलिए वह खुद सदाशिव से मिलने गया और उससे कहा, ''सूरदास को पाठ सिखाया न जाए तो गाँव में बुरे लोगों की संख्या बढ़ जाएगी। इसलिए तुम्हीं परिष्कार का कोई मार्ग सुझाओ।''

सदाशिव ने उपाय सुझायी। दूसरे दिन उसी उपाय के अनुसार ग्रामाधिकारी ने सभी ग्रामीणों को अपने यहाँ बुलाया और सूरदास की फरियाद का विवरण देते हुए कहा, ''इसकी फरियाद उचित लगती है। पर सूरदास को बताना पड़ेगा कि उसे क्योंकर सदाशिव की सलाह को अमल में लाना पड़ा?''

इस पर सूरदास ने कहा, ''इसके पहले भी सदाशिव ने दो बार सलाह दी थी। उससे मेरा फ़ायदा हुआ और मैंने विश्वास कर लिया।''

''तब सदाशिव को तुम्हें दो हज़ार अशर्फ़ियाँ हरज़ाने के रूप में देनी ही पड़ेंगी। पर इसके पहले सदाशिव की सलाहों के कारण तुम्हें जो फ़ायदा हुआ है, उसका हिसाब लगाओ और रक़म उसे दे दो।'' ग्रामाधिकारी ने अपना फ़ैसला सुनाते हुए कहा।

यह सुनकर गाँव के सब लोग हँस पड़े। पर ग्रामाधिकारी ने गंभीर स्वर में कहा, ''आगे से जिस किसी को भी सदाशिव की सलाह से लाभ होगा, उन्हें अपने लाभों में से एक भाग उसे देना होगा। नुक़सान होने पर वह अपना हिस्सा आपको देगा। यह कार्रवाई मेरे सामने ही होनी चाहिए। अगर ऐसा नहीं हुआ तो मैं इसका जिम्मेवार ठहराया नहीं जा सकता।''

पहले लोगों को सदाशिव से मुफ्त में सलाह मिलती थी। पर अब उन्हें इसके लिए क़ीमत चुकानी पड़ने लगी। पूरा गाँव सूरदास को कोसने लगा। पर सदाशिव तो कहने लगा, ''स्वार्थी का आशा से भरा गुण ही अच्छे आदमी की सहायता को मूल्य देता है। यों एक प्रकार से सूरदास ने मेरी भलाई की। आगे से किसी को भी मुफ़्त में सलाह नहीं दूँगा।'' अब से वह और आराम से दिन गुजारने लगा।

माया सरोवर

4

(जटाओंवाले बरगद के वृक्ष के निकट सिद्धसाधक को पुराना एक तालपत्र ग्रंथ मिला। परंतु राजा के बेटे और बेटी के बारे में कुछ मालूम नहीं हो पाया। वे पास ही के अरण्यों की ओर निकले। उस समय उस प्रदेश के गाँव की जनता जब अपने ज्वार के खेतों की ओर जाने लगी तो उन्होंने विकृत आकार के एक प्राणी को देखा, जो हाथी पर चढ़ा हुआ था। वह हाथी को उनपर पिल पड़ने के लिए उकसा रहा था।)

अपनी ओर बढ़ते हुए हाथी को और उस पर बैठे मगर के आकार के प्राणी को देखकर ग्रामीण भय के मारे थरथर काँपने लगे। इतने में उस विकृत आकारवाले ने हाथी को उनके पास दौड़ाया और ऊँचे स्वर में चिल्लाने लगा, ''मुझसे डरकर जो भाग जाएँगे, उनके सिवा मैं किसी को हानि नहीं पहुँचाऊँगा।''

उसकी बातों से ग्रामीणों की जान में जान आयी। वह चाहे कितना भी विकृत आकार का क्यों न हो, उन्हें यह जानकर तसल्ली हुई कि वह आखिर मानव है। स्तंभित हो खड़े ग्रामीणों को संबोधित करते हुए विकृत आकारवाले ने उनसे कहा, ''तुम लोगों में से मुखिया कौन है? उधर जो लड़का मंच पर था, क्या वह तुम्हारे गाँव का ही है? उससे मैंने कहा था कि वह मेरे लिए आहार ले आये और ले आये अपने साथ एक वैद्य को भी। लेकिन तुम्हारी लाठियों और तलवारों को देखते हुए लगता है कि तुम लोग मुझे मारने के लिए तैयार हो यहाँ आये हो।''

ग्रामीणों को लगा कि भले ही आकार में वह विकृत क्यों न हो, पर वह भी उन्हीं की तरह का मानव है। मुखिया ने हाथ जोड़कर उसे प्रणाम

किया और कहा, ''मगर साहब, हमें माफ़ कीजिए। मंच पर के उस लड़के ने आपकी सारी बातें हमें बतायीं। पर उसने तो अजीब हाथी और अजीब मानव कहते हुए हमें भ्रम में ड़ाल दिया। इसलिए हमें लगा कि हाथियों का झुंड हमारे ज्वार के खेतों को बरबाद करने खेतों में घुस गया।''

हाथी पर आसीन मगर के विकृत आकारवाले ने हाथ उठाते हुए क्रोध से कहा, ''अरे ओ मुखिये, जो बात करनी थी, उसे छोड़कर व्यर्थ बातें बोले जा रहे हो। बताओ, मेरे लिए आहार और वैद्य को ले आये या नहीं?''

उसकी नाराजगी से डरे मुखिये ने एक क़दम पीछे हटाया और कहा, ''मगर साहब, आपके लिए मेरे घर में स्वादिष्ट भोजन पक रहा है। अब रही वैद्य की बात, एक नहीं, दो-दो वैद्यों को ले आया।''
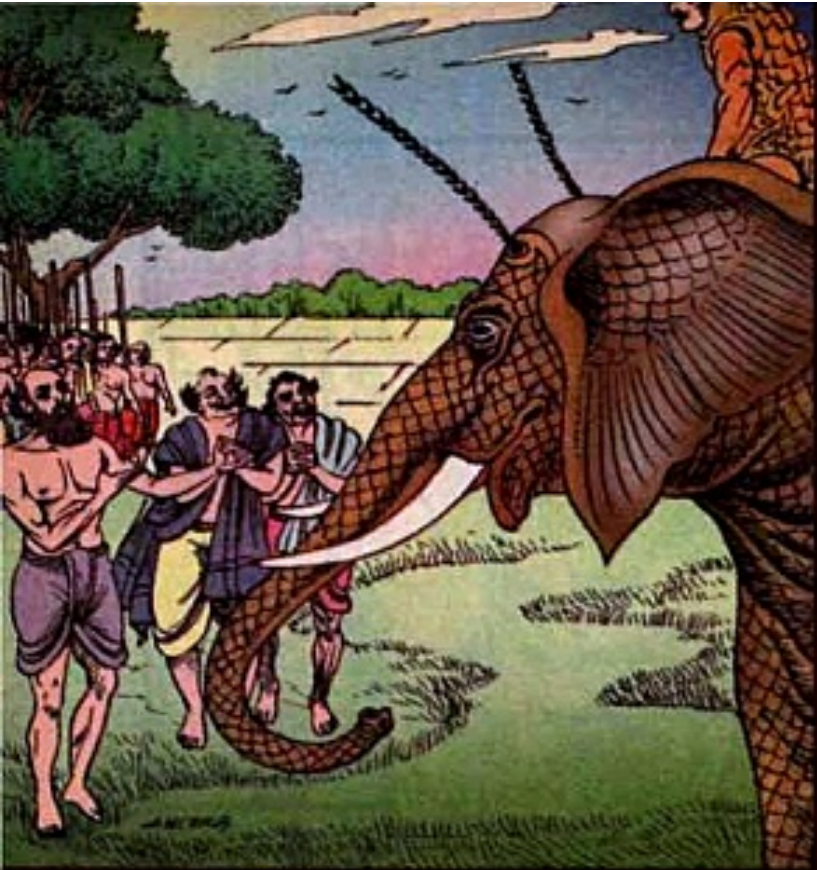
मगर के आकारवाले ने अपने पेट में चुभी तलवार को एक बार ग़ौर से देखा, फिर धीरे से कराहते हुए कहा, ''वह वैद्य है कहाँ?''

गाँव का मुखिया अक़्लमंद था और था चालाक भी। अपने हाथ में पड़ी लाठी को ऊपर उठाते हुए उसने ग्रामीणों से कहा, ''हमारे चरकाचारी कहाँ है? वीर कहाँ मर गया?''

चरकाचारी और वीर डर के मारे वहाँ से खिसक जाने की तैयारी में थे। गाँव के मुखिये ने उन्हें पकड़ लिया और उनके हाथ पकड़कर उन्हें आगे लाते हुए कहा, ''मगर साहब, ये दोनों ही हमारे गाँव के वैद्य हैं। दोनों वैद्य शास्त्र में माहिर हैं। इनकी चिकित्सा अचूक है।''

दूसरे ही क्षण मगर के उस आकारवाले ने सिर पर ढके शिरस्त्राण को पीछे हटाया। उसकी उम्र चालीस से ज़्यादा नहीं होगी। उसका शरीर गोरा था। घुंघराले बाल उसकी भुजाओं पर गिर रहे थे।

''यह तो साधारण मानव है। लगता है, किसी राज परिवार का है,'' शस्त्र-चिकित्सक वीर ने बग़ल में खड़े चरकाचारी के कानों में फुसफुसाया।

''राक्षस कामरूपी होते हैं। चाहते हों तो क्षण भर में अपना रूप बदल सकते हैं। जो भी हो, अपने गुरु को दिये वचन से बद्ध मैं रोगग्रस्त राक्षस या पिशाच की भी चिकित्सा करूँगा।'' चरकाचारी ने कहा।

''मैंने भी जिस गुरु से वैद्य शास्त्र सीखा है, उन्हें ऐसा ही वचन दे चुका हूँ। अच्छा, आप आगे बढ़िये।'' वीर ने कहा।

चरकाचारी हाथी के पास आया और नम्र स्वर में कहा, ''मगर प्रभु, आप किस रोग से ग्रस्त हैं, रोग असल में है क्या? कृपया बताइये।''

''कहीं तुम अंधे तो नहीं हो? देखते नहीं, मेरे पेट में यह तलवार चुभ गयी है,'' कहते हुए मगर के आकारवाले ने चुभी तलवार दिखायी।

चरकाचारी ने कहा, ''प्रभु, यह वीर शस्त्र-चिकित्सा में माहिर है। इसकी बराबरी का कोई है नहीं। वह जैसे ही तलवार बाहर खींचेगा, मैं रक्त प्रवाह को रोकने और ज़ख्म को भरने के लिए जड़ी-बूटियाँ इकट्ठा करके ले आऊँगा,'' कहते हुए बड़ी तेज़ी से वह झाड़ियों की ओर दौड़ा-दौड़ा गया।

इसके बाद वीर हाथी पर चढ गया और विकृत आकारवाले के पेट में चुभी तलवार को ग़ौर से देखने के बाद कहा, ''महोदय, तलवार चमक रही है। यह कोई राज तलवार लगती है।''

मगर के आकारवाले ने ज़ोर से कराहा और कहा, ''लगती नहीं, वास्तव में राज तलवार ही है। एक घमंडी राजकुमार ने मुझपर तलवार चलायी और मेरे पेट में घुसेड़ दी। उसे सजीव पकड़ना चाहता था और इस प्रयत्न में मैंने अपने आपको विपत्ति में फंसा लिया। मेरे जो साथी थे, वे निकम्मे थे, भाग गये। लाचार मैं अपने प्राण की रक्षा के लिए इन प्रदेशों में भटक रहा हूँ।''

उसकी बातों से वीर को यह जानने में देर नहीं लगी कि यह वह राजकुमार नहीं है, जिसके अपहरण की बात उसने सुन रखी थी। इसका यह मतलब हुआ कि उन अपहरणकर्ताओं में से यह भी एक है। अब वह चाहे तो तलवार को चिकित्सा की आड़ में उसके पेट में इधर-उधर घुमा सकता है और उसे मार डाल सकता है। इसमें एक ख़तरा भी है। इसके मर जाने से यह मालूम नहीं हो पायेगा कि बंदी राजकुमार और राजकुमारी कहाँ हैं। इसलिए इस दुष्ट को मौत से बचाना होगा और अच्छा यही होगा कि इसे राजा के सुपुर्द कर दिया जाए। यों सोचा वीर ने।
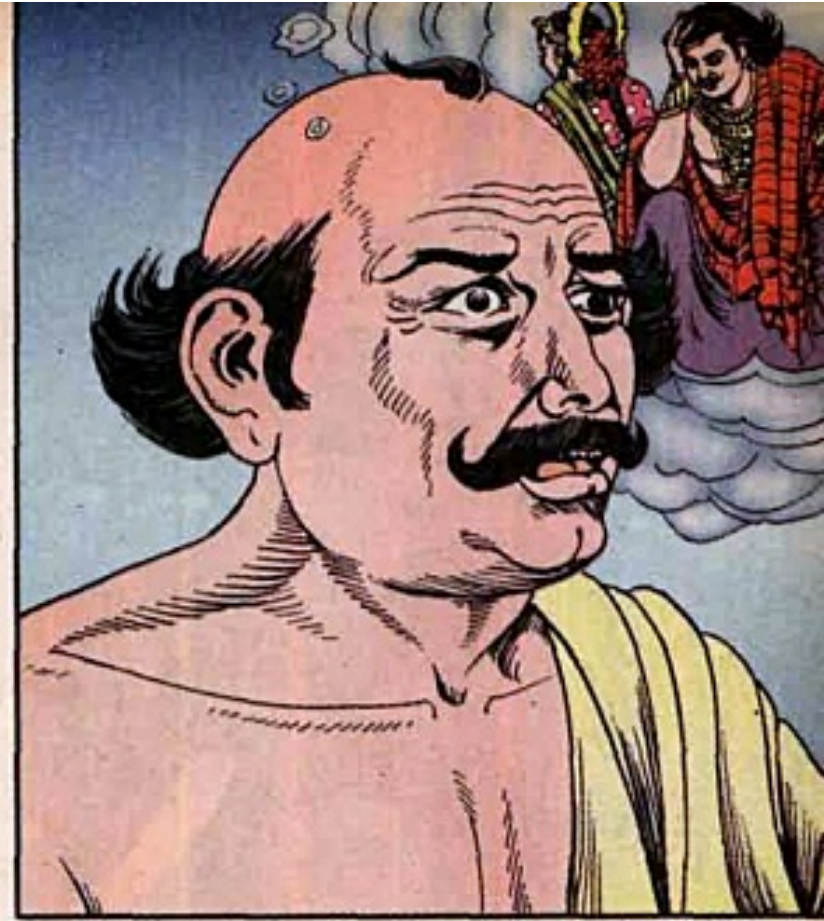
यों सोचते हुए दूर खड़े गाँव के मुखिया से वीर ने कहा, ''यहाँ जैसे ही शस्त्र-चिकित्सा पूरी हो जायेगी, इन्हें अपना गाँव ले जाना होगा। पहले किसी को वहाँ भेजिए और उनके वहाँ रहने का आवश्यक प्रबंध कीजिए।''

वीर के यों कहते ही मगर के आकारवाले ने
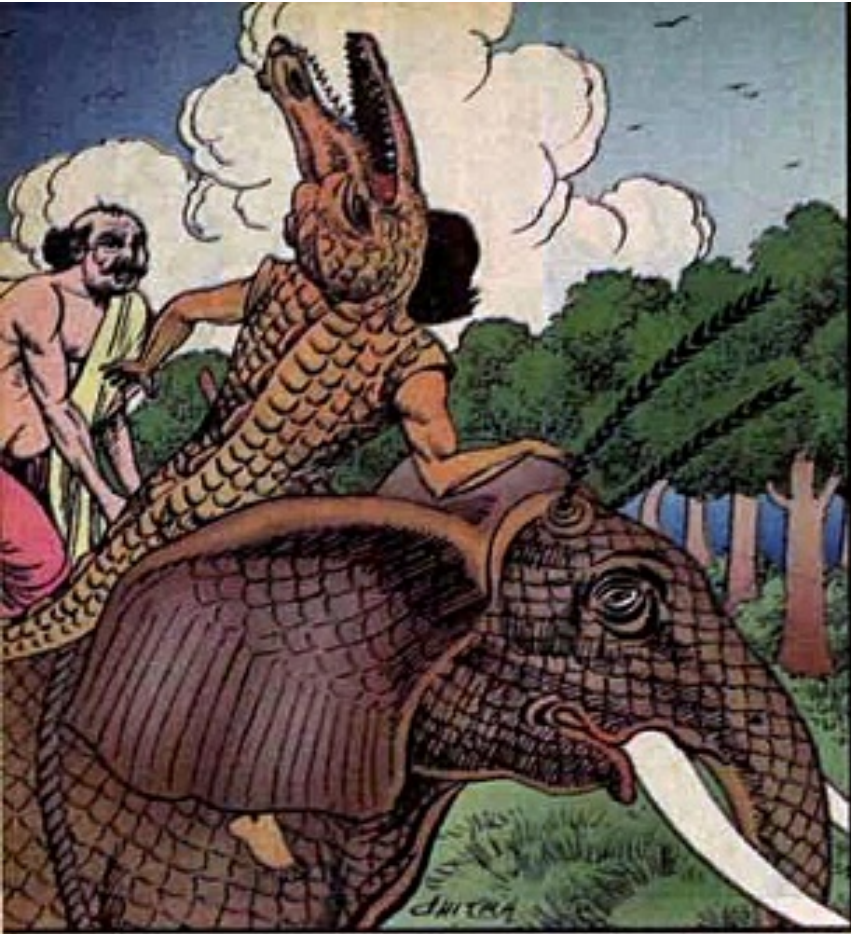
उसे ग़ौर से देखते हुए कहा, ''अरे, अपना नाम क्या बताया? वीर !'' कहते हुए उसने उसका गला पकड़ लिया और ऊपर उठाते हुए कहा, ''दर्द से पीड़ित मैंने सच बता दिया। लगता है कि मेरी बातों से तुम्हें सब कुछ मालूम हो गया, मेरी असलियत का पता चल गया। पर यह राज़ तुमने खोल दिया और गाँववालों से बता दिया तो यहीं तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा।''

वीर ने थरथर काँपते हुए कहा, ''मगर महोदय, मुझे मत मार डालना। सब मेरा दुर्भाग्य है। मेरा एक भी बेटा नहीं। छः लड़कियों का बाप हूँ। अधूरा वैद्य हूँ और इसी के बल पर ज़िन्दगी काट रहा हूँ। तलवार बाहर खींचने जा रहा हूँ। दर्द होगा, सह लीजिए।''

मगर आकारवाले ने अब वीर को छोड़ दिया। वीर अपने दोनों हाथों से पूरा बल लगाकर पेट से तलवार बाहर खींचने ही वाला था कि इतने में पेड़ों के पीछे से चरकाचारी की चिल्लाहट सुनायी पड़ी, ''रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए।'' साथ ही उन्हें दो-तीन हाथियों के चिंघाड़ने की भी ध्वनि सुनायी पड़ी।

गाँव का मुखिया तुरंत मगर आकारवाले के पास आया और कहा, ''मगर महोदय, चरकाचारी एक ही बार चिल्ला सका और चुप हो गया। लगता है, वह ख़तरे में है। हो सकता है, वह मारा भी जा चुका हो। इसलिए अच्छा यही होगा कि उन हाथियों के हम पर पिल पड़ने के पहले ही गाँव में लौट जाएँ।''

''तुमने ठीक कहा। पर मेरी चिकित्सा का क्या होगा? कब तक इस टूटी तलवार को पेट में रखता हुआ फिरता रहूँगा,'' दर्द के मारे कराहते हुए उस मगर आकारवाले ने कहा।

इतने में चरकाचारी की एक और बार चिल्लाहट सुनायी पड़ी, ''रक्षा कीजिए।'' इतने में दूर से कुछ जंगली हाथी झाड़ियों को, पेड़ों को रौंदते हुए तेज़ी से इनकी तरफ़ बढ़े चले आने लगे।

मगर आकारवाले ने तुरंत अपने शिरस्त्राण से अपने सिर को ढक लिया, अपने हाथी को सहलाया और लंबे त्रिशूल को हाथ में ले लिया। वीर हाथी पर बैठे-बैठे ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, ''रक्षा करो, रक्षा करो !'' उसकी चिल्लाहट चरकाचारी की चिल्लाहट से भी ज़ोरदार थी।

मगर के आकारवाले ने उसकी चिल्लाहटों की परवाह न करते हुए और अपने हाथी को सहलाते हुए ज़ोर से हुंकार भरा, ''जलग्रह।''

जलग्रह तेज़ी से आगे बढ़ा। बढ़े चले आ रहे एक जंगली हाथी को अपने दंतों से उसने घायल कर दिया। पीड़ा से पीड़ित वह जंगली हाथी गिर गया। मौक़ा पाते ही मगर आकारवाले ने अपने त्रिशूल को एक और हाथी के कुंभस्थल में चुभो दिया। चोट को सह न सकने के कारण वह हाथी सिर झुकाता हुआ ज़मीन पर झुक गया। बाकी हाथी डर गये और मुड़कर भागने लगे तो मगर आकारवाले ने उनका पीछा किया और उन्हें भगा दिया। हाँफते हुए उसने अपने हाथी को रोका। अकस्मात् उसे शस्त्र-चिकित्सक वीर की याद आयी। उसने चारों ओर नज़र दौड़ायी और 'वीर', 'वीर' कहकर चिल्लाने लगा।

मगर आकारवाले की पीठ के पीछे छिपे वीर कहने लगा, ''मगर महोदय, अब तक मगर की पूँछ पकड़कर लटक रहा था। हम जीत गये या जंगली हाथी जीत गये?''

वीर ज़िन्दा है, यह जानकर मगर आकारवाला थोडा शांत हो गया। उसने कहा, ''अच्छा हुआ तुम ज़िन्दा हो। इसी जलग्रह पर बैठे रहो। पेट में चुभी इस तलवार को कब निकालोगे?''

''महोदय, जल्दबाज़ी मत कीजिए। लगता है, लड़ाई में व्यस्त आप असली बात भूल गये। चरकाचारी यहाँ कहीं से चिल्ला रहा था। वह आपके लिए जड़ी-बूटियाँ लाने के लिए इसी

तरफ़ आया था।''

''हाँ, हाँ! कहीं किसी बाघ ने उसे निगल लिया हो तो क्या यह तलवार मेरे पेट में ही रह जायेगी? उसे बाहर निकालकर आवश्यक चिकित्सा तुमसे नहीं हो पायेगी?'' मगर आकारवाले ने पूछा।

उसके इस सवाल पर वीर ठठाकर हँस पडा और बोला, ''महोदय, मैं शस्त्र-चिकित्सक ज़रूर हूँ, पर इसका यह मतलब नहीं कि ज़ख्म को भरने का उपाय मैं नहीं जानता। मैं तो अनजाना बनकर गाँव में पेट भरने के लिए ज़िन्दगी गुज़ार रहा हूँ। क्योंकि मैं यह चिकित्सा भी करके अपने गुरु के साथ द्रोह नहीं कर सकता। वे अपना काम करते हैं और मैं अपना काम करता हूँ, जिससे हम दोनों का पेट भरता है। हम दोनों एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी

बनना नहीं चाहते। ऐसा न करने पर गाँववाले हम दोनों में से किसी एक को गाँव से भगा देंगे।''

''अरे ओ कपटी, मेरी पूँछ छोड़ और आगे आ जा। चलो, ढूँढ़ते हैं, वह आचारी कहाँ रह गया।'' कहते हुए मगर आकारवाले ने हाथी को आगे बढ़ाया।

इसके पहले की चरकाचारी की चिल्लाहटें जयशील और सिद्धसाधक ने भी सुनी थी। वे दोनों झाड़ी में पाये गये तालपत्र ग्रंथ को लेकर उस आदमी की खोज में लग गये, जिसने उसे वहाँ छोड़ा था। उस समय उन्होंने चरकाचारी का आर्तनाद सुना था। वे उसी तरफ़ बढ़ते हुए गये, जहाँ से चीख सुनायी दे रही थी। थोड़ी दूर जाने के बाद जंगली हाथियों को देखा और देखा उस मगर आकारवाले को, जो जलग्रह हाथी पर बैठकर जंगली हाथियों से लड़-भिड़ रहा था।

यह दृश्य देखते ही सिद्धसाधक आवेश में आ गया और अपने दंड को ऊपर उठाते हुए कहने लगा, ''जयशील, इसी बदमाश ने हमारे कनकाक्ष महाराज के बच्चों का अपहरण किया। मैंने पहले जैसे कहा, ''यह कोई यक्ष, गंधर्व या किन्नर होगा।''

इतने में फिर एक और बार चरकाचारी का आर्तनाद सुनायी पड़ा। जयशील ने तुरंत म्यान से तलवार निकाली और कहा, ''ड़रो मत, हम आ रहे हैं,'' फिर वे दोनों उस तरफ़ तेजी से आगे बढ़े।

सिद्धसाधक जयशील के साथ जाना नहीं चाहता था, पर उसे जाना पड़ा। चरकाचारी के पास पहुँचने पर उन्होंने देखा कि एक अजगर ने उसे अपने पाश में बाँध रखा है और उसके सिर को अपने मुँह में डालने की कोशिश में है।

जयशील छलांग मारकर वहाँ पहुँच गया और अजगर के सिर को चरकाचारी के सिर से अपनी तलवार द्वारा अलग करने की कोशिश में लग गया। वह नहीं चाहता था कि इस प्रक्रिया में चरकाचारी घायल हो जाए। पर अजगर भी चुप बैठा नहीं रहा। वह शायद बहुत भूखा था, इसलिए उसने अपना पूरा बल लगाकर अपने सिर से तलवार हटायी।

''जयशील, यह मानव जंगली नहीं लगता। पढ़ा-लिखा लगता है। पहले तुरंत उस अजगर को मार ड़ालो।'' चरकाचारी को ग़ौर से देखते हुए सिद्धसाधक ने कहा।

जयशील ने अजगर के सिर को अपने बायें हाथ से पकड़ लिया और उसे पीछे खींचते हुए अपनी तलवार से उसके सिर पर प्रहार किया। उसके इस प्रहार से अजगर का आधा सिर कट गया और वह छटपटाने लगा।

अजगर के साथ ही नीचे गिरते हुए चरकाचारी को जयशील ने पकड़ लिया और कहा, ''साधक, जल्दी जाओ और पानी ले आओ। यह अपनी सुध खो बैठा है, पर जीवित है।''

सिद्धसाधक दौड़ता हुआ गया और पास ही के सरोवर से अपने कमंडल में पानी भरकर ले आया। जयशील ने चरकाचारी के चेहरे पर जैसे ही पानी छिड़का, उसने आँखें खोलीं और कहने लगा, ''मैं कहाँ हूँ? ज़िन्दा हूँ या अजगर के पेट में हूँ।''

''तुम ज़िन्दा हो। पहले यह मंत्रजल पी जाओ। तुम्हारा भय दूर हो जायेगा।'' कहते हुए सिद्धसाधक ने उसे पानी पिलाया।

भय के मारे थरथर काँपते हुए चरकाचारी ने अब आँखें खोलीं। वह उनसे पूछने लगा, ''आप कौन है? वह मगर प्रभु कहाँ है? वीर कहाँ है?''

उसकी बातों से यह स्पष्ट हो गया कि वह किसके बारे में पूछ रहा है। जयशील ने सिद्धसाधक से कहा, ''सुनी आपने इसकी बातें। उस अजीब हाथी पर आसीन मगर आकारवाले से इसका कोई संबंध है।'' फिर चरकाचारी से उसने पूछा, ''तुम्हारा क्या नाम है? क्या तुम उस मगर आकारवाले के सेवक हो या मित्र?''

चरकाचारी इस प्रश्न का उत्तर देने ही वाला था कि इतने में मगर आकारवाला वृक्षों में से बाहर आया और कहा, ''चरकाचारी मेरा निजी वैद्य है। तुम लोग कौन हो? सच नहीं बताया तो अपने जलग्रह से कुचलवा डालूँगा। वह अपने पैरों तले तुम दोनों को रौंद डालेगा।''

जयशील और सिद्धसाधक ने उसे क्रोध भरी आँखों से देखा। जयशील का हाथ अनायास ही तलवार की मूठ पर चला गया। सिद्धसाधक ने आँखें लाल करते हुए दंड को उठाकर हाथ में पकड़ लिया। *(सशेष)*

भेंट, शेखर को

अगल-बगल के गाँवों के रहनेवाले नागेंद्र और शेखर घने दोस्त थे और खेती करने में माहिर थे। दो हफ्तों में वे एक बार शहर जाते थे और सब्जियाँ, फल आदि गाड़ियों में लादकर बेच आते थे।

एक बार लौटते समय शेखर ने पत्नी के लिए दो साड़ियाँ खरीदीं। चमेली व गुलाब के फूल और सोने की एक अंगूठी भी खरीदी।

"ये सब हम क्यों खरीदें? हो सकता है, हमारी खरीदी चीज़ें उन्हें पसन्द न आयें!" नागेंद्र ने अपनी असहमति प्रकट करते हुए कहा।

इस पर शेखर हँस पड़ा और बोला, "पसंद क्यों नहीं करेंगी। इन्हें पाकर उन्हें बेहद खुशी भी होगी। पति होने के नाते हमारा भी फर्ज़ बनता है कि उनका ख्याल रखें, उन्हें खुश रखें। इन्हें देखकर मेरे बच्चे कितने खुश होंगे! ऐसी छोटी-छोटी भेंट देने से उन्हें लगता है कि उन्हें सब कुछ मिल गया।"

शेखर की बातें उसके दिल को छू गयीं। उसने उसे गौर से देखा और कहा, "तुमने बिल्कुल ठीक कहा।" कहते हुए नागेंद्र दुकान के अंदर गया और अपनी पत्नी व बच्चों के लिए बहुत चीज़ें खरीदीं। अब उसका मुख खुशी से खिला हुआ था।

शेखर जब घर पहुँचा तो उसकी लायी चीज़ें देखकर रोती हुई उसकी पत्नी कहने लगी, "पता नहीं, आज सबेरे-सबेरे किसका चेहरा देखा। श्याम को गली के बच्चों ने पीटा। रस्सी टूट गयी और घड़ा कुएँ में गिर गया। अब आप हैं, जो आमदनी को इस तरह फूंक रहे हैं। जानते नहीं, हमें नकद पैसों की कितनी सख्त ज़रूरत है?" कहती हुई वह आँसू पोंछने लगी। *- सरला गुप्ता*

राजा विक्रम
और वेताल की
नई कथाएँ

देवी माँ

धुन का पक्का विक्रमार्क यथावत् पुनः पेड के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा और मौन श्मशान की ओर जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, संसार में कई ऐसे लोग पाये जाते हैं, जिन्हें यह भय लगा रहता है कि बीच में ही कार्य में भंग पड जायेगा और कार्य पूरा नहीं होगा। ऐसे लोग किसी भी कार्य की पूर्ति में बिश्वास नहीं रखते। उनमें धुन का अभाव होता है। पर तुम्हारी बात अलग है। तुम ऐसे लोगों में से नहीं हो। फिर भी इस आधी रात के समय तुम्हें श्मशान में इतना कष्ट सहते हुए देखकर मुझे तुम पर

उसका नाम अन्नपूर्णा था। वे बड़े लाड़-प्यार से उसे पालने-पोसने लगे।। उनकी बेटी ही उनके लिए सब कुछ थी। पर अकस्मात् पाँचवें साल की उम्र में वह एक अनजाने रोग से ग्रस्त हो गई।

अन्नपूर्णा जो कुछ भी खाती पचता नहीं था। वैद्यों ने उसकी चिकित्सा की, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। कोई और न चारा पाकर उसके पिता ने अपना दुखड़ा अंगद नामक मुनि को सुनाया।

अंगद थोड़ी देर तक ध्यान में रहा और फिर आँखें खोलकर कहा, "पुत्री के पैदा होने के बाद उसके प्रति तुममें अनुराग हद से ज़्यादा हो

दया आती है। मुझे तुम्हारा यह काम क़तई राजोचित नहीं लगता। देखा गया है कि कभी-कभी विवेकी मनुष्यों को उन्हीं के कारण यातनाएँ सहनी पड़ती हैं, जिनके वे भक्त हैं, जिनकी वे आराधना करते हैं। उदाहरण स्वरूप मैं तुम्हें अंगद नामक एक मुनि की कहानी सुनाऊँगा, जिसने बुढ़ापे के कारण अपना विवेक खो दिया और खो दी अपनी तार्किक दृष्टि। साथ ही उस विश्वेश्वर की भी कहानी मुझसे सुनो, जिसने उस मुनि का विश्वास किया।" फिर वेताल अंगद मुनि की कहानी यों सुनाने लगा :

रत्नगिरि नगर में रत्नगुप्त नामक एक भाग्यवान रहा करता था। रत्नावती उसकी धर्मपत्नी थी। दोनों परोपकारी व देवभक्त थे। बहुत सालों के बाद उनकी एक पुत्री हुई।

गया। तुमनें देव-भक्ति भुला दी। तुम्हारी पुत्री का रोग तुम्हारे लिए भगवान की तरफ़ से एक चेतावनी है। उसमें देव-भक्ति जगाओ। वह इससे प्रेरित होकर यह सत्य जान ले कि भगवान माता-पिता से महान हैं।"

रत्नगुप्त ने अंगद के कथनानुसार ही किया। उस दिन से अन्नपूर्णा श्रद्धापूर्वक भगवान के पूजा-पाठ में मनःपूर्वक लग गयी। खाने के लिए जो भी दिया जाता था, उसे भगवान का दिया प्रसाद मानकर खा लेती थी। क्रमशः उसका रोग घटता गया। परंतु बालक ध्रुव और भक्त प्रह्लाद की तरह सदा भक्ति में लीन रहती थी।

यह देखकर रत्नगुप्त को बहुत दुख होता था कि देव भक्ति अन्नपूर्णा का रोग बन गया। जब

वह सयानी हो गयी और पिता ने उसके विवाह की तैयारियाँ शुरू कर दीं तो वह कहने लगी, ''मेरा जीवन भगवान को समर्पित है। मैं विवाह नहीं करूँगी।''

रत्नगुप्त ने उसे बहुत समझाया, डराया, धमकाया पर वह टस से मस न हुई। जब वह अपने प्रयत्नों में हार गया तब वह फिर से अंगद के पास गया और आपबीती सुनायी। उसे अपने घर आने के लिए निमंत्रित किया।

अंगद ने अन्नपूर्णा से कहा, ''हर मनुष्य में भगवान है। तुम मनुष्य में भगवान को देखना चाहती हो तो उससे विवाह करो, जिसे तुम्हारे माता-पिता चुनते हैं। अपने पति में भगवान को देखो। तब भगवान तुम पर दया करेंगे और तुम्हें संतान प्राप्ति का वर देंगे। उस संतान को भगवान अपना अंश भी प्रदान करेंगे।''

हर स्त्री माँ बनना चाहती है। उसका यह सहज गुण है। अन्नपूर्णा ने अंगद की बात मान ली। वैभव नामक संपन्न व्यापारी युवक से उसका विवाह हुआ। एक साल के अंदर ही उन्हें एक सुंदर पुत्र हुआ। अन्नपूर्णा को लगता था कि भगवान ही उसका पुत्र बनकर जन्मे हैं। पति-पत्नी दोनों ने मिलकर उसका नाम रखा, विश्वेश्वर।

विश्वेश्वर को एक तरफ़ माँ का पर्याप्त वात्सल्य मिल रहा था तो दूसरी तरफ़ उसे भक्ति का वातावरण भी प्राप्त था। देव-पूजा उस घर में हर दिन हुआ करती थी। छोटी-सी उम्र में ही

ऐहिक सुखों के प्रति उसमें विरक्ति पैदा हो गयी। देव-दर्शन के लिए वह तड़पने लगा।

वैभव ने अपनी पत्नी के दुख का कारण जानकर उसे सलाह दी, ''तुमने ही अपने पुत्र में इतनी देव-भक्ति जगायी। कम से कम अब उसे भगवान से दूर रखो।''

अन्नपूर्णा को पति की यह सलाह सही लगी। दूसरे दिन उसने अपने बेटे को कड़े स्वर में कहा, ''तुम्हारी यह उम्र खेलने-कूदने की है। आज से देव-पूजा बंद कर दो और अन्य बच्चों की तरह पढ़ो-लिखो, खेलो-कूदो।''

माता की आज्ञा का पालन करना विश्वेश्वर से नहीं हो पाया। उससे अब उस घर में रहा नहीं गया। वह जंगल चला गया और एक वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या करने लगा। उस जंगल

में किसी भी क्रूर पशु ने उसपर आक्रमण नहीं किया। किसी विषैले सर्प ने उसे छूने का साहस नहीं किया। जब उसे भूख लगती थी, आँख मूँदकर प्रार्थना करने मात्र से उसे फल मिल जाते थे।

अरण्य में उसने लगातार दस सालों तक घोर तपस्या की। फिर भी उसे भगवान के दर्शन नहीं हुए।

एक दिन प्रातःकाल यथावत् विश्वेश्वर सरोवर में नहा रहा था। उस समय एक शिकारी हिरण का शिकार करते हुए वहाँ आया। उसने उसे देखते ही आश्चर्य-भरे स्वर में कहा, ''परमेश्वर, आपने जिस प्रकार अर्जुन को दर्शन दिये, उसी प्रकार मुझे भी दर्शन दिये! कितना भाग्यवान हूँ मैं!'' कहते हुए उसने श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़े। विश्वेश्वर सरोवर से बाहर आया और कहा, ''मालूम नहीं, आप कौन हैं? पर अवश्य ही आप उम्र में मुझसे बड़े हैं। आपको मुझे प्रणाम करना नहीं चाहिए।''

तब शिकारी ने कहा, ''आपके मुख पर सूर्य की आभा है। गले में सर्पहार है। प्रणाम ही नहीं बल्कि आपके पैरों पर पड़ना चाहिए,'' कहते हुए उसने साष्टांग नमस्कार किया।

विश्वेश्वर स्तंभित रह गया। उसने अपने सिर और गले को टटोला तो वे जैसे थे, वैसे ही थे। उनमें कोई परिवर्तन नहीं था। वह उससे कुछ कहने ही वाला था कि इतने में शिकारी ने कहा, ''वाह, स्वामी ने मुझपर दया दिखायी और फिर अंतर्धान हो गये। मुझसे बड़ा भाग्यवान इस धरती पर कोई नहीं होगा।'' वह ऐसा व्यवहार करने लगा, मानों वहाँ विश्वेश्वर है ही नहीं। फिर शिकारी वहाँ से चला गया।

"मैं और परमेश्वर? कहीं मुझपर भगवान हावी तो नहीं हो गये। जिन्हें मैं तो देख नहीं पा रहा हूँ पर दूसरे मुझमें भगवान देखने लगे।" वह यों सोच में पड़ गया। अब उसकी मनोस्थिति बड़ी ही विचित्र थी। बहुत देर तक सोचने के बाद उसने इसकी सच्चाई जानने के लिए जनता के बीच में जाने का निश्चय किया।

जब वह रत्नगिरि की तरफ़ बढ़ता चला जा रहा था तब रास्ते में मुनि अंगद सामने से आये। अब उनमें बुढ़ापे के लक्षण स्पष्ट दिखायी दे रहे थे।

बातों-बातों में अंगद को मालूम हुआ कि वह अजनबी व्यक्ति रत्नगिरि जा रहा है तो उसने कहा, "पुत्र, पहले साल में एक बार ही सही, लगता था कि भगवान के दर्शन हो रहे हैं। परंतु पिछले दस सालों से भगवान मुझसे रूठ गये हैं। उनके दर्शन नहीं हो रहे हैं। रत्नगिरि में अन्नपूर्णा नामक एक पतिव्रता स्त्री है। विश्वेश्वर नामक उसका एक उत्तम पुत्र भी है। एक देवी ने सपने में मुझसे कहा था कि उसके दर्शन करने पर मेरी इस समस्या का परिष्कार होगा। उस प्रकार हर साल रत्नगिरि जाकर विश्वेश्वर से मिल आता हूँ। पर मेरी समस्या जैसी थी, वैसी ही है। उससे बताना कि अब मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है, इसलिए उससे मिलना मेरे लिए संभव नहीं है। बताना कि कोई संदेश हो तो मुझे भेजे।"

अंगद की बातों ने विश्वेश्वर को सन्देह में डाल दिया। उसने अंगद को पूरा वृत्तांत बताया और कहा, "दस सालों से मैं अरण्य में तपस्या करता रहा हूँ और आपका कहना है कि आप हर साल मुझसे मेरे घर में मिल रहे हैं। यह कैसे संभव हो सकता है?"

तब अंगद ने विश्वेश्वर को ग़ौर से देखा और कहा, "मेरी दृष्टि कमज़ोर हो गयी है, इसीलिए तुम्हें अब तक पहचान नहीं पाया। तुम्हें ही तुम्हारे घर में इतने सालों से मिलता आ रहा हूँ। अब सब कुछ मेरी समझ में आ गया। अपने पुत्र में तुम्हारी माँ ने भगवान को देखा और तुमने उसे छोड़ दिया। परमेश्वर नहीं चाहते थे कि अपने भक्त को मनोक्लेश हो, इसीलिए वे तुम्हारा रूप धारण करके वहाँ रह रहे हैं। मैं भी कितना मूर्ख हूँ जो तुम्हारे घर जाकर भगवान के दर्शन करता रहा और इस सत्य से अपरिचित रहा।

भगवान ही शिकारी के रूप में आये और तुम्हें घर लौटने पर बाध्य किया। दस सालों की तपस्या के बाद तुम्हें भगवान के दर्शन हुए। अब घर जाओ। परमात्मा को भी मुग्ध कर देनेवाले मातृप्रेम से दस सालों तक तुम वंचित रहे। मातृदेवी में भगवान को देखते हुए शेष जीवन बिताओ।''

विश्वेश्वर ने बिना कुछ कहे मुनि अंगद को साष्टांग नमस्कार किया और तेज़ी से घर की ओर निकल पड़ा।

वेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद अपने संशय प्रकट करते हुए पूछा, ''राजन्, विश्वेश्वर के जीवन का ध्येय था, तपस्या करके भगवान के दर्शन करना। इसके लिए उसने शारीरिक सुखों व मातृप्रेम को भी त्याग दिया और तपस्या करने जंगल चला गया। सदा भगवान का ही ध्यान करनेवाले विश्वेश्वर से उनका यह कहना कि तुम्हारी माता ही भगवान है, असंगत नहीं लगता? इसमें तो मुझे किसी भी प्रकार का धार्मिक चिंतन व तार्किक दृष्टि दिखायी नहीं देती। उसके इस असंगत व्यवहार का कारण क्या उसका बुढ़ापा है या अस्वस्थता। मेरे इन संदेहों के कारण जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''अंगद ने जब विश्वेश्वर के साथ अरण्य में घटी सब घटनाओं का ब्योरा सुना तब उन्हें उससे कहना पड़ा कि शिकारी के रूप में उसे भगवान के दर्शन हुए और यों उसकी तपस्या सफल हुई। यह सत्य प्रकट होने के बाद भी अगर विश्वेश्वर अरण्य में तपस्या करता रहे तो यह उसकी नादानी होगी, अविवेक भरा व अनुचित कार्य होगा।

इसी कारण मुनि अंगद ने उसे हितबोध किया कि वह अपनी माँ में ही परमेश्वर के दर्शन करे। यह अंगद की आध्यात्मिक परिपक्वता का परिचायक है, बुढ़ापा व अस्वस्थता का नहीं।

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित गायब हो गया और पुनः पेड़ पर जा बैठा।

(आधार 'वसुंधरा' की रचना)
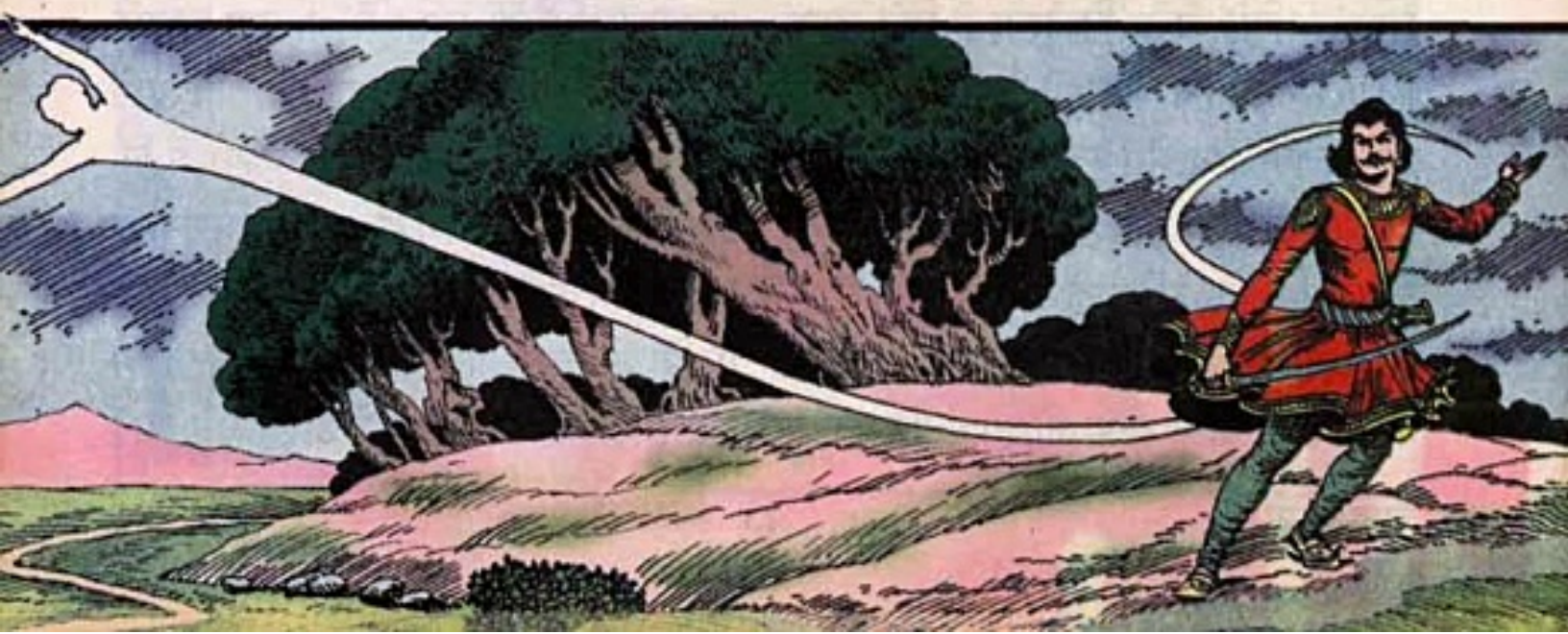
जंगल के पास अनोखा मेज़बान

हजारों साल पहले की बात है। एक जंगल के निकट दो दानव भाई रहते थे - इल्वल और वतापी। नगर जंगल से ज्यादा दूर नहीं था। वे दूसरों की दौलत के भूखे थे किन्तु उन्हें लूटने का इनका तरीका विचित्र था।

ये अपनी मर्जी के मुताबिक कोई भी रूप ले सकते थे। इल्वल एक भला गृहस्थ बनकर जंगल से गुजरने वाले पथ पर घूमता रहता। वह प्रायः नगर जानेवाले व्यापारियों अथवा राजा के दरबार में जानेवाले पंडितों को देखता। वह उन्हें अपने घर में थोड़ी देर विश्राम करने के लिए अनुरोध करता। वह देखने में इतना सौम्य लगता था कि किसी को उसकी नीयत पर सन्देह नहीं होता। वे उसके पीछे-पीछे चल पड़ते।

इल्वल उन्हें अपने अहाते में ले जाता और एक शीतल सरोवर दिखा देता जिसमें वे स्नान करते। फिर वह उन्हें बरामदे में विश्राम करने के लिए कहता और यह भी सूचित करता कि वह उनके लिए विशेष प्रकार का भोजन बना रहा है।

भोजन सचमुच विशेष प्रकार का था। यह मेमने के माँस का बना था। और वह भी एक असाधारण मेमने का। यह उसका छोटा भाई था जो अपने को मेमने में बदल लेता था जिसे वह काट कर उसका भोजन बनाता था। अतिथियों को यह बात मालूम नहीं हो पाती थी। वे खुशी से भोजन कर लेते थे।

इल्वल, उनका मेज़बान, तब अचानक अपने अनुज को याद करता।

''वतापी, ओ मेरे वतापी, तुम कहाँ हो?'' वह पुकारता। अतिथियों को पेट में एक संवेदन का अनुभव होता, फिर वह तीव्र पीड़ा में बदल

सेठ संन्यास लेने के बाद अपनी सारी दौलत उन्हें दे दिया होगा। उन दानव भाइयों का कोई पड़ोसी नहीं था जो यह पता लगा सके कि उनके घर में क्या होता था।

जैसा कि सर्वविदित है, भारत के प्राचीन महान ऋषियों में एक थे अगस्त्य। एक बार उन्हें कुछ धन की आवश्यकता पड़ी। वे कुछ सम्पन्न व्यक्तियों के पास याचना करने गये। वे निस्सन्देह सहायता कर सकते थे किन्तु उन्होंने उन्हें इल्वल और वतापी के पास जाने की सलाह दी, क्योंकि वे अकेले ही ऋषि की आवश्यकता भर पर्याप्त धन दे सकते थे।

अगस्त्य दोनों दानव-भाइयों के पास गये। उन दोनों ने हाथ जोड़कर मुस्कुराते हुए ऋषि का स्वागत किया। "हे पुण्य-यात्री! कृपया मेरे गृह को पवित्र करें।" बड़े भाई ने अपने घर के आंगन में उन्हें ले जाते हुए कहा।

"हे पुण्यात्मा! मैं समझता हूँ तुम काफी समृद्ध हो गये हो। तुम्हारा चेहरा और शरीर यही बताता है।" अगस्त्य ने कहा। इल्वल की आँखों में देखकर उन्होंने उसकी वास्तविक प्रकृति को समझ लिया था।

"जी हाँ, जी हाँ! सच कहें तो आप जैसे भले लोगों के आशीर्वाद से ही मैं समृद्ध हुआ हूँ।" इल्वल ने कहा। वह निस्सन्देह एक प्रकार से सत्य कह रहा था।

"विश्राम करें। तब तक मैं आपके लिए अपने सर्वोत्तम मेमने का भोजन तैयार करता

जाता। जब तक वे कुछ समझ पाते, उसके पहले ही उनके पेट फट जाते और वतापी के टुकड़े बाहर बिखर जाते। इल्वल उन्हें एकत्र कर मिला देता और कुछ मंत्र बुदबुदाता। और देख! वतापी मुस्कुराता हुआ उसके सामने खड़ा हो जाता और भद्रतापूर्वक उसे अभिवादन करता।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि अतिथि मृत पाये जाते जिनके शरीर को वे दोनों भाई जंगल के गढ्ढे में फेंक आते।

इल्वल और वतापी दिन व दिन धनी होते चले गये। वास्तव में वे उस क्षेत्र के सबसे धनी व्यक्ति बन गये। लोगों को उनकी समृद्धि का रहस्य नहीं मालूम था। उनसे कुछ दूरी पर रहनेवाले लोग यह अनुमान लगाते कि शायद उन्हें गड़ा खजाना हाथ लग गया होगा या कोई

हूँ।'' इल्वल ने कहा। उसका भाई, जो पहले ही मेमना बन चुका था, ऋषि का ध्यान आकृष्ट करने के लिए आंगन में खड़ा मेमिया रहा था।

''यह कितनी करुणाजनक बात है कि मेरे कारण इतने सुन्दर प्राणी की मृत्यु हो जायेगी! क्या शाकाहारी भोजन का प्रबंध नहीं है?'' अतिथि ने सुझाव दिया।

''चिन्ता न करें महात्मन! आप इसे खा सकते हैं और साथ ही मैं भी खा सकता हूँ।'' इल्वल ने रहस्यमय उत्तर दिया।

मेमने को मारकर उसका माँस पकाया गया और अतिथि को परोसा गया। ऋषि बिना कुछ बोले भोजन करने लगे जबकि मेजबान वहाँ अर्थपूर्ण मुस्कान के साथ खड़ा रहा।

''बहुत-बहुत धन्यवाद! यह सचमुच बहुत स्वादिष्ट पकवान था।'' ऋषि ने टिप्पणी की।

''हाँ तो अब आपको यह बता देना चाहता हूँ कि इस पकवान खानेवाले को जीवन में फिर कभी खाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।'' दानव ने अट्टहास करते हुए कहा।

ऋषि अपने पेट पर हाथ फेरते हुए बैठे रहे।

''वतापी, वतापी, मेरे भाई! जल्दी आ जा।'' इल्वल ने दुबारा पुकारा। लेकिन अतिथि के पेट फटने का कोई आसार दिखाई नहीं पड़ा। चकित होकर और भयभीत-सा वह ऋषि को ध्यान से देखने के लिए और निकट गया।

''मेरे प्यारे बंधु! तुम्हारा भाई अब कभी बाहर नहीं आयेगा। मैंने उसे पूरी तरह पचा लिया है।'' ऋषि ने शान्त भाव से बताया।

इल्वल भय से थर-थर काँपने लगा और ऋषि अगस्त्य के चरणों में गिर पड़ा। उसने ऋषि की आवश्यकता के अनुसार उन्हें पर्याप्त धन दे दिया और वचन दिया कि फिर कभी ऐसी दुष्टता नहीं करेगा।

इस प्रकार इल्वल और वतापी का संकट समाप्त हुआ। ऋषि का तपोबल दानवी माया से अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुआ।

- बिन्दुसार

अपने भारत को जानो

प्रश्नोत्तरी

लम्बी प्रतीक्षा आखिरकार खत्म हुई और छुट्टियाँ शुरू हो गईं। अब तुम स्कूल, कक्षा, पाठ्य पुस्तकें, कापियाँ अगले ५०-६० दिनों के लिए भूल जा सकते हो। तुममें से बहुत 'घर से दूर घर' की तलाश में बाहर निकल पड़ोगे। इस महीने की प्रश्नोत्तरी ऐसे स्थलों से संबंधित है, जिन्हें तुम भ्रमण करना चाहोगे, यदि पहले उन्हें नहीं देखा हो। प्रश्नोत्तरी कम से कम तुम्हें उन स्थानों और उनसे संबंधित व्यक्तियों के विषय में ज्ञान से समृद्ध करेगी।

१. कर्नाटक स्थित गुलबर्गा कभी एक साम्राज्य की राजधानी थी। क्या उसका नाम बता सकते हो? उसकी स्थापना किसने और कब की?

२. एक चैनल (जलमार्ग) दो द्वीपसमूहों को अलग करता है। उस चैनल का तथा साथ ही द्वीप समूहों के नाम बताओ।

३. पूरबी भारत के एक नगर को महान यात्री इब्न बतूता द्वारा अल-कटका के रूप में वर्णित किया गया है। उसका वर्तमान नाम क्या है?

४. प्रसिद्ध लेखक रुडयार्ड किपलिंग का जन्म भारत के एक नगर में हुआ था। किस नगर में?

५. भारत के एक महानगर का पूर्व नाम शाहजहाँनाबाद था। नगर का नाम बताओ।

६. एक अन्य महानगर का पुराना नाम था - अलीनगर। अब उसका नाम क्या है?

७. पांड्या वंश की राजधानी से होकर एक नदी बहती थी। नगर और नदी के नाम बताओ।

८. रामेश्वरम मुख्य स्थल भूमि पर स्थित नहीं है। बीच में जलराशि का प्रसार है। उसका नाम क्या है?

(उत्तर अगले महीने)

अप्रैल प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. १९८० - रोम

२. क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, वेल्लोर

३. *एक स्वतंत्र राज्य में*

४. कराँची (तब भारत में)

५. गोदावरी

६. अटल बिहारी वाजपेयी

७. सिंह

८. दक्षिण गंगोत्री

९. हैदराबाद में बेगमपेट

१०. अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में बंजर द्वीप

उपकार बुद्धि

सीताराम वैद्य तो नहीं था, पर सिर दर्द के लिए उसके पास खास दवा थी। सामान्यतया प्राप्त होनेवाले पत्तों को वह तोड़ लाता था और समान भागों में वह उन्हें तोलता था। फिर उन्हें वह खूब पीसता था। पीसे गये उन पत्तों के पतले लेप को माथे पर रख देता था। बस, चंद क्षणों में सिर दर्द गायब हो जाता था।लगता था, मानों सिर-दर्द को उसने हाथों से निकाल फेंका हो।

हर दिन कम से कम एक आदमी उसकेपास इस काम के लिए आता था। आये हुए लोगों से वह तराजू ले आने को कहता था। फिर वह पिछवाड़े में जाकर पौधों के पत्ते तोड़ ले आता था। वह अपनी वैद्यगिरी के लिए किसी से प्रतिफल नहीं मांगता था। पर लोग जो भी देते, उसे सहर्ष स्वीकार कर लेता था।

सीताराम के घर के सामने ही जानकीराम का घर था। उपकार के अपने स्वभाव के लिए गाँव भर में वह प्रसिद्ध था। गाँव के किसी के भी घर में सहायता की ज़रूरत पड़ती तो बिन बुलाये वह पहुँच जाता था।

जानकीराम अचारों का व्यापार करता था। चूँकि उसके बनाये गये अचार स्वादिष्ट होते थे और गुणात्मक भी, इसलिए आसपास के शहरों में भी उसकी अच्छी माँग थी। अचार को बनाने के लिए जिन पदार्थों को वह उपयोग में लाता था, वह पहले उन्हें तोलता था और इसके लिए वह तराजू काम में लाता था। चूँकि उसके घर में तराजू था, इसलिए सीताराम के घर दवा के लिए आनेवाले लोग अपने साथ तराजू नहीं लाते थे। वे जानकीराम से माँगकर तराजू ले जाते थे।

यहाँ तक तो ठीक है। पर सीताराम को इस बात की शिकायत थी कि लोग उसकी अपेक्षा

- नंदकुमार -

जानकीराम की अत्यधिक प्रशंसा क्यों करते हैं, उसके उदार स्वभाव का गुणगान क्यों करते हैं। इस वजह से सीताराम के मन में जानकीराम के प्रति द्वेष घर कर गया।

जानकीराम की तारीफ़ के पुल क्यों बांधे जा रहे हैं, यह रहस्य जानने के लिए सीताराम ने अपनी दृष्टि केंद्रित की। फिर कुछ बातें उसे मालूम हुईं।

जानकीराम हँसमुख था। वह कभी भी नहीं चिढ़ता। दूसरे के दिल को चोट पहुँचानेवाला कोई काम नहीं करता। पर अपने व्यापार के विषय में बहुत ही सख्त था। वह जो दाम निर्धारित करता, उससे न ही एक पैसा कम लेता था, न ही एक पैसा ज़्यादा। वह अचार उधार में कभी नहीं देता। वह किसी की सहायता धन के रूप में नहीं करता था। मुफ़्त सलाहें अवश्य देता था।

सीताराम को इस बात का दुख था कि वह अपनी दवा के लिए किसी से पैसे नहीं माँगता; तो फिर क्यों उसी की तारीफ़ होती है। परंतु उसे उम्मीद थी कि किसी दिन जानकीराम की असलियत का पता लोगों को लग जायेगा और उसकी अपनी उपकार बुद्धि की वाहवाही होगी।

एक दिन सीताराम खुद सर दर्द का शिकार हो गया। अब उसने अपनी ही दवा को उपयोग में लाने का निश्चय किया। पत्ते तोड़ने के लिए घर के पिछवाड़े में जाते-जाते उसने अपनी बेटी से जानकीराम के यहाँ से तराजू ले आने को कहा।

सीताराम ने अभी पूरे पत्ते तोड़े भी नहीं कि इतने में उसकी बेटी ने आकर कहा कि जानकीराम कहते हैं, उनके पास तराजू नहीं है।

सीताराम ने कहा, ''पूछ सकती थी न कि क्या किसी को दिया है?''

''पूछना चाहती थी पिताजी ! पर मैं समझ गयी कि उनकी पत्नी अंदर किसी काम के लिए तराजू का इस्तेमाल कर रही है। जब वे हमें देना नहीं चाहते तब भला कैसे पूछूँ कि क्या किसी को दिया?'' सीताराम की बेटी ने कहा।

''शायद उन्हें उसकी ज़रूरत पड़ी होगी। तुम बता सकती थी न कि जल्दी ही लौटा दूँगी।''

''कहती, पर उन्होंने तो इतना ही बताया कि तराजू नहीं है। यह तो नहीं कहा कि हमें तराजू से

काम है।'' सीताराम की बेटी ने अपनी विवशता व्यक्त की।

सीताराम को अब जाकर स्थिति समझ में आयी। गाँव में उपकारी कहा जानेवाला जानकीराम सबको तराज़ू देता है और उसे देने से इनकार कर रहा है। इसका यह मतलब हुआ कि उसके दिल में खोट है। उसकी पोल खोलने का उसने निश्चय किया। वह तुरंत जानकीराम के घर गया। उस समय जानकीराम तराज़ू से कुछ तोल रहा था। उसे देखते ही उसने कहा, ''आइये सीतारामजी ! जब अचार का काम होता है, तब दूसरे तराज़ू को इस्तेमाल में नहीं लाते। इसीलिए मैंने आपकी बेटी से कहा कि तराज़ू नहीं है। बुरा न मानना।''

''इसमें बुरा मानने की क्या बात है ! तुम तो जानते हो कि हर दिन मेरे यहाँ रोगी आते हैं। एक और तराज़ू खरीदना था तुम्हें। तब तुम्हारे अचार का काम रुकेगा नहीं और मुझे भी इससे सुविधा होगी।'' सीताराम ने व्यंग्य-भरे स्वर में कहा।

इस पर चकित होकर जानकीराम ने कहा, ''आपके कहने के पहले ही मैंने यह काम कर दिया। जब से आप हमारे घर के सामने रहने लगे हैं तब से तराज़ू की माँग बढ़ गयी। मैं तो यह नहीं कह सकता कि यहाँ उसकी सख्त ज़रूरत है, इसलिए आपको दे नहीं सकता। इसलिए एक दूसरा तराज़ू भी खरीदकर घर में रख लिया। उसी तराज़ू को भीम आम तोलने के लिए अपने घर ले गया।''

यह सुनते ही सीताराम का सर चकरा गया। वह अपनी ग़लतफ़हमी समझ गया। उसे यह समझने में देर नहीं लगी कि लोग इसीलिए जानकीराम की प्रशंसा करते हैं। जानकीराम ने उसकी बेटी से अगर कहा कि तराज़ू नहीं है, तो अक्षरशः यह सच है। अब वह तराज़ू भीम के घर में है।

यों सोचकर सीताराम ने जानकीराम से कहा, ''उपकार बुद्धि स्वभावतया होती है और वह तुममें भरी पड़ी है। तुम सचमुच महान उपकारी हो।''
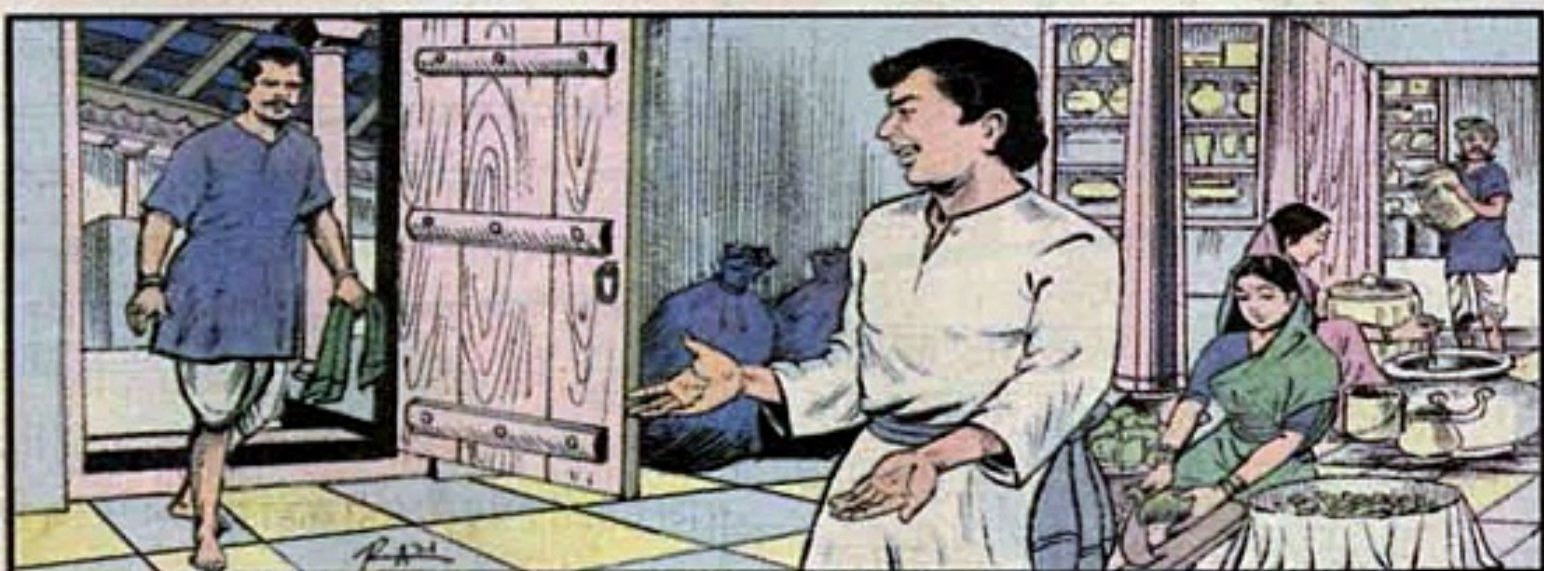
वाग्विदग्ध - तेनाली रामा

राजा कृष्णदेवराया का कृपा पात्र बनने से पहले, तेनाली रामा प्रायः राजा के दरबार में उपस्थित रहने का प्रयास करता था, किन्तु बहुत बार महल के फाटक का मुख्य संतरी और उसका सहायक उसे अंदर जाने से रोक देता था और उसके रूप-रंग के बारे में भद्दी टीका-टिप्पणी करता था।

एक दिन राजा और उसके दरबारी एक नृत्य-कार्यक्रम का अवलोकन कर रहे थे। राजा का आदेश था कि कोई मिलने आकर उसे बाधा न पहुँचाये। रामा हर रोज की तरह दरबार में हाजिर हुआ। जैसे ही वह महल के फाटक पर आया, संतरियों ने उसे रोक दिया। बल्कि उसे जोर से धक्का देकर नीचे गिरा दिया।

रामा उठकर ऐसे खडा हो गया मानों कुछ हुआ ही नहीं और धूल झाड ली। ''तुम दोनों कितने बहादुर हो। तुम्हें ऐसे अच्छे तन्दुरुस्त शरीर के लिए पुरस्कार मिलना चाहिए।'' उसने व्यंग्यपूर्वक कहा। संतरियों ने उसकी बात को सच मान लिया। ''रामा, तुम तो राजा से प्रायः पुरस्कार पाते रहे हो। हमारी ओर कोई ध्यान ही नहीं देता।'' मुख्य संतरी ने दुख के साथ कहा।

''घबराओ नहीं। मुझे अंदर प्रवेश करने दो। आज मुझे राजा जो कुछ देंगे, उसे तुम लोगों को बाँट दूँगा। आधा तुम्हारा होगा और बाकी आधा तुम्हारा सहायक ले सकता है।'' उसने मुख्य संतरी से कहा। लालची संतरियों ने उसे खुशी से अंदर जाने दे दिया।
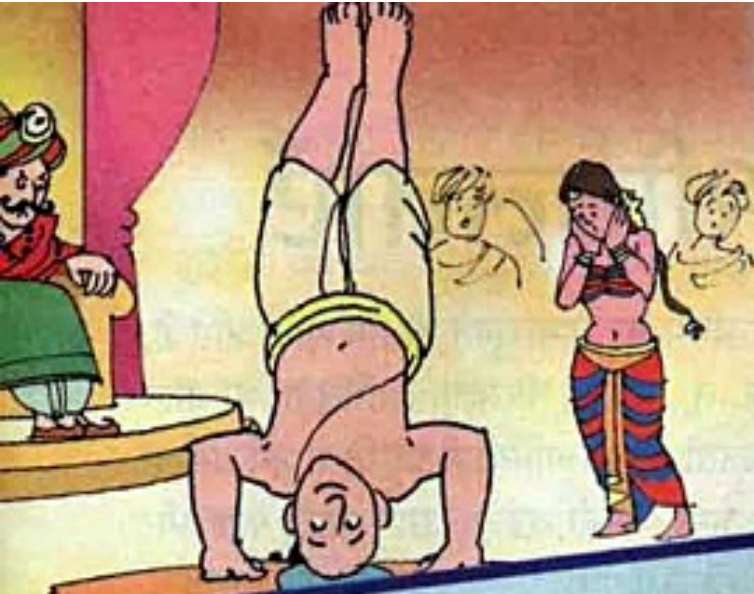
दरबार में प्रवेश करने के बाद रामा शान्ति से मंच पर जाकर सिर के बल खड़ा हो गया। नर्त्तक क्रोध में चीखने लगा और प्रदर्शन बंद कर दिया। राजा आग बबूला हो उठा। ''वह मूर्ख कौन है? उसे दूर करो मेरी नज़र से।'' वह गरजा।

रामा अपने पाँव पर खड़ा होकर बोला, ''महाराज, जैसे आप नर्तक को उसकी प्रतिभा के लिए पुरस्कार देंगे, वैसे ही क्या आप मुझे भी मेरे कार्य के लिए पुरस्कार नहीं देंगे?'' ''पुरस्कार? बेशक, तुम्हें पुरस्कार दिया जाएगा।'' राजा ने कहा और सेवकों को आदेश दिया, ''इसे एक सौ कोड़े लगाओ।''
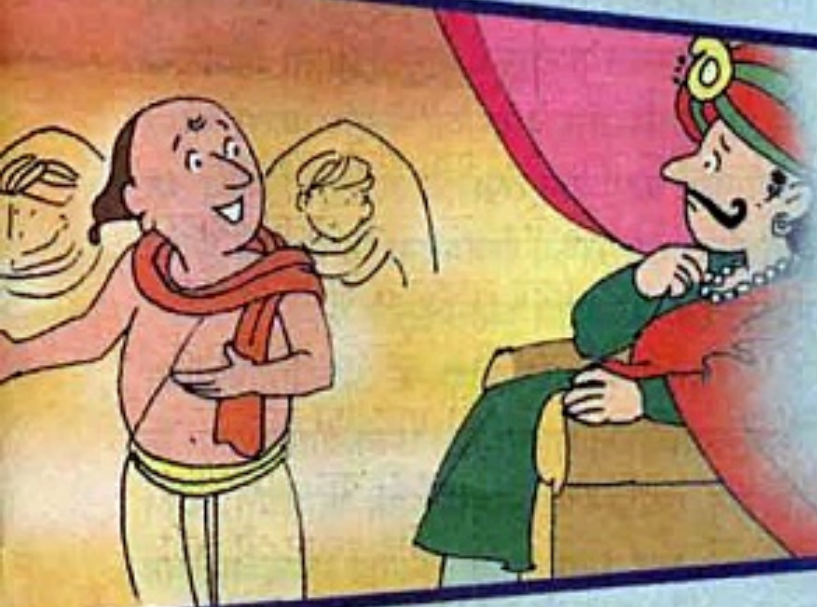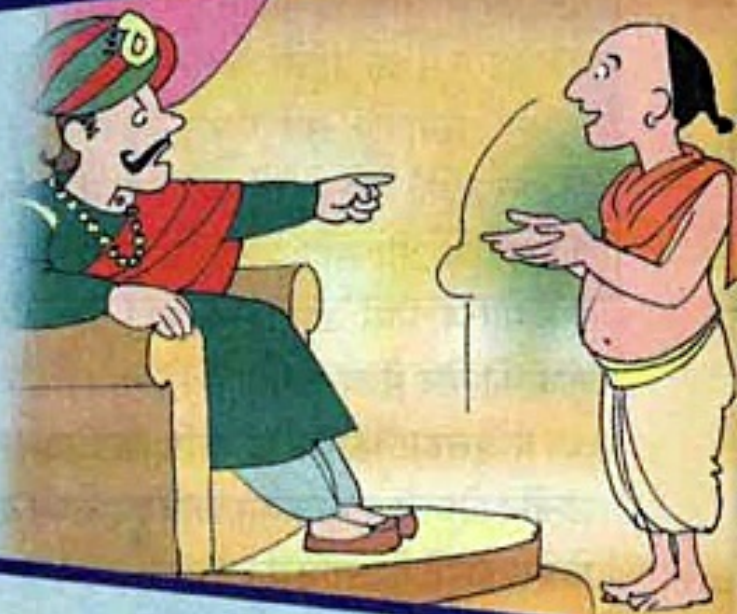
''शुक्रिया महाराज! मैंने अपना पुरस्कार आपके मुख्य संतरी और उसके सहायक के बीच बाँटने का वचन दिया है।'' रामा ने कहा। राजा कुछ समझ न सका। रामा ने विस्तारपूर्वक समझाते हुए कहा कि कैसे बराबर महल के संतरी उसे परेशान करते हैं और उस दिन किस प्रकार अंदर आने के लिए उनसे सौदेबाजी करनी पड़ी।

दोनों संतरियों को बुलाया गया। और राजा ने खुले हाथ से उन्हें इनाम दिया। स्पष्ट है कि रामा के साथ हुए सौदेबाजी से कहीं अधिक कोड़े उन्हें पड़े। और फिर रामा को महल में प्रवेश से कभी नहीं रोका गया।

ग्रीष्मकाल - शीतलताएँ

हवा में गर्मी थी। लग रहा था मानों हवा आग उगल रही हो। तालाब का पानी इस वजह से बहुत गरम हो गया था। उस तालाब का एक मेढक इस गर्मी को सह नहीं पाया और फुदककर किनारे पर एक छाया में आ पहुँचा। पर उसे क्या मालूम था कि वह छाया एक सर्प के फन की छाया है।

सूरज की तप्त किरणों को सह न सकने के कारण एक और साँप थक गया और हाँफते हुए एक मोर के पास आया। वह वहीं बेहोश होकर नींद की गोद में चला गया।

ऋतुसंहार काव्य के कवि कालिदास हैं। उन्होंने ग्रीष्मऋतु का वर्णन करते हुए अपने काव्य में ऐसे दृश्यों की सृष्टि की है।

ग्रीष्म का नाम सुनते ही हमें याद आते हैं, धूप, लू, पसीना, नीरसता, शिथिलता, पर आग उगलती हुई इन गर्मियों में प्रकृति ने हमें प्रसादा है, अंगूर, नारंगी, खजूर, आम आदि फल और चमेली जैसे पुष्प।

गर्मी से बचने के लिए आजकल हम वातानुकूलित यंत्र, ऐयरकूलर, पंखे, आइसक्रीम तथा शीतल पेय को उपयोग में लाते हैं और ये बहुत हद तक हमें गर्मी से बचाते हैं। पर पुराने जमाने में गर्मी से बचने के लिए घरों का निर्माण ही कुछ ऐसा होता था, जिससे गर्मी महसूस न हो। वे इसके लिए आवश्यक सावधानियाँ बरतते थे। साधारणतया गाँवों में मामूली जनता झोंपड़ियों में रहती थी और वे इसका निर्माण करते समय इस बात का ध्यान रखते थे कि हवा निर्बाध घर के अंदर आ सके। राजभवनों के निर्माण में भी इस दिशा में विशेष ध्यान रखते थे।

१६७२ में मध्यप्रदेश के ओर्छा प्रदेश पर मधुकरशाह का शासन था। उनके शासनकाल के दौरान रायपरवीन नामक एक कवयित्री थी। उसका अपना भवन एक अनोखा भवन था। यह भवन तरह-तरह के फल-फूलों के वृक्षों के बीच बना दो मंजिलों का भवन था। इसकी ऊँचाई कम तो थी पर पहली मंजिल ज़मीन के नीचे थी। पूरी गर्मी दूसरी मंजिल में स्थित हो जाती थी। इसलिए भूमि के अंदर का भवन बिल्कुल ही शीतल होता

था। ''फूलबाग़'' नामक इस भवन के नीचे की मंजिल के ऊपर के उद्यानवन में क़रीनेवार पानी के बुलबुलों की व्यवस्था हुई। ये नीचे की मंजिल पर पानी की छींटों को बारिश की पतली धारा की तरह छिड़काते रहते थे।

राणा जगतसिंह राजस्थान के मेवाड के थे। उन्होंने संगमरमर से सुप्रसिद्ध सरोवर भवन (लेक पैलेस) का निर्माण करवाया था। चूँकि यह भवन एक सरोवर के बीचों-बीच था, इसलिए यह भवन सदा ठंडा रहता था।

गर्मी की छुट्टियाँ बिताने लोग हमारे देश के शिमला, देहरादून, मसूरी, रानीखेत, उदकमंडलम, दार्जिलिंग, महाबलेश्वर, नैनीताल आदि स्थानों पर जाते हैं। वहाँ गर्मी की छुट्टियाँ बिताने के लिए आवश्यक सुविधाएँ हैं। वहाँ रहने के लिए अतिथि गृह भी हैं। बहुत पहले ब्रिटिश शासकों ने इन्हें यहाँ बनवाया था। वे हमारे देश की गर्मी को सह नहीं पाते थे, छटपटा जाते थे। कुछ विदेशी तो गर्मी से होनेवाली बीमारियों के कारण मर भी गये। इसी कारण वे शीतल पर्वतों पर भवनों का निर्माण करवाते थे और ग्रीष्मकाल में वहीं रहते थे।

१८५० तक हमारे देश में बर्फ़ का निर्माण नहीं होता था। ब्रिटिश बिना बर्फ़ के गर्मी सह नहीं पाते थे। इसलिए वे अमेरिका से बर्फ़ के गोले मंगवाते थे और उन्हें सुरक्षित रखते थे। मद्रास में मेरीना समुद्रतट के पास बर्फ़ को सुरक्षित रखने के लिए उन्होंने ''आइस हाऊस'' का भी निर्माण किया।

राजस्थान व गुजरात प्रांतों में गर्मी अत्यधिक
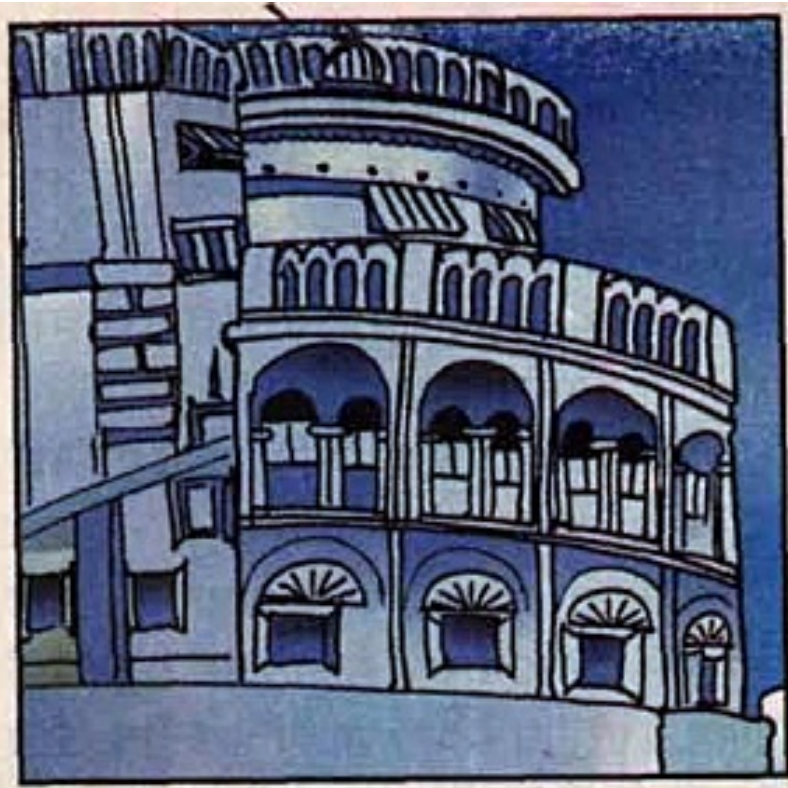
पड़ती है। ४२ से लेकर ५२ डिग्री सेल्सियस तक की यहाँ गर्मी होती है। इसीलिए वहाँ के पुरुष बड़ी-बड़ी पगड़ियाँ पहनते हैं।

गुजरात में राजा और रानियाँ जिस राजमार्ग से गुजरती थीं, उसके निकट २०० फुट की गहराईवाले विशाल कुएँ खोदे जाते थे। सफ़र में प्यास बुझाने के लिए ये उपयोग में लाये जाते थे। २५वीं शताब्दी में वैरसिंह वाघेला द्वारा निर्मित ''अडलाजवाब'' बहुत ही प्रसिद्ध है।

जोधपुर और बहपूर स्थानों में घरों को नीले या सफ़ेद रंगों से पोतते हैं। ये रंग गर्मी और रोशनी को परावर्तित करते हैं, इसलिए घर में ठंडक होती है।

बिजली के पंखों के उपयोग में आने के पहले हमारे लोग ताड़ के पत्तों के पंखे उपयोग में लाते थे। इन्हें रंगबिरंगे और सुंदर बनाते थे। इस कला में हमारे लोग माहिर थे। राजा तो हाथी के दाँतों व चंदन के काठ से बने पंखों को उपयोग में लाते

थे। कालिदास ने अपने काव्यों में लिखा है कि ये चंदन के पानी में पंखों को डुबोते थे। ब्रिटिश अधिकारियों ने हवा के लिए एक अलग ही तरह का इंतज़ाम किया। वे कपड़ों को ऊपर की छतों से लटकाते थे। मज़दूर एक रस्सी से उन्हें खींचता जाता था, जिससे हवा चलने लगती थी।

गर्मी के प्रहार से बचने के लिए हमारे बडे लोग कुछ खास तरीके अपनाने लगे।

सबेरे और शामको घर के चारों ओर पानी छिड़कते थे। खिड़कियों में खसखस की टट्टियाँ लगाते थे। सुगंध से भरी जड़ियों को बीच-बीच में रखते थे और उन्हें अक़्सर पानी से भिगोते थे।

जल, दही, छाछ आदि मिट्टी के नये गागरों में भरते थे, इसलिए वे ठंडा होते थे। कुछ लोग सिर पर अरंडी का तेल लगाते थे तो कुछ लोग सिर स्नान करते थे। गर्मी के प्रभाव से बचने के लिए गुलाबी पंखुड़ियों के साथ शहद मिलाकर गुलकंद तैयार करते थे और खाते थे।

नारियल का पानी, नींबू रस, ककड़ी व फल ज़्यादा से ज़्यादा उपयोग में लाते थे। शरीर पर चंदन पोतते थे।

अगर उस समय के पेयों के बारे में बताना हो तो बताना होगा कि वे गुड़, नींबू रस, सोंठ, इलायची का चूर्ण मिलाकर शरबत बनाते थे और पीते थे। उनका विश्वास था कि इससे शरीर शीतल हो जाता है। उत्तर भारत में जिस प्रकार लस्सी प्रसिद्ध है, उसी प्रकार दक्षिण भारत में छाछ प्रसिद्ध है।

गुजरात में आमों से बनाया जानेवाला भाप्लो, बंगाल में बिल्व रस, देश भर में गुड, नींबू का रस, दही मिलाकर बनाया जानेवाला गुरिका शरबत भी उतने ही प्रसिद्ध हैं।

आम की अच्छी फसल गर्मी के मौसम में होती है। ये तरह-तरह के हैं। इनसे पेय, अचार बनाये जाते हैं। १६वीं सदी में मुगलों ने नये-नये प्रकार के आमों को ईजाद किया।

गर्मी के दिनों में यह बहुत ज़रूरी है कि धूप में न निकलें। बच्चों की गर्मियों की छुट्टियाँ ख़त्म हो जाती हैं और जून महीने में पाठशालाएँ खुल जाती हैं। छुट्टियों में लुत्फ़ उठाइये और पाठशालाओं में जाने के लिए तैयार हो जाइये।

भारत दर्शक

कुछ दिन पहले हम लोगों ने एक राजा के बारे में पढ़ा था जिनकी पूजा भगवान के समान होती है। यहाँ राजा के समान पूजे जानेवाले एक भगवान की कहानी है। मध्यप्रदेश के ओरछा स्थित राजा राम के मंदिर में चलते हैं। किवदंती है कि राजा राम का यह मंदिर सन् १५०० के आसपास बुंदेल वंश के मधुकर शाह द्वारा निर्मित किया गया था। वह कृष्ण भक्त था जबकि पत्नी रानी गणेश राम भक्त थी।

प्रचलित कथा के अनुसार राजा मधुकर शाह चाहता था कि उसकी पत्नी उसके साथ कृष्ण भक्तों के लिए प्रिय स्थान वृन्दावन चले। रानी ने इनकार कर दिया बल्कि उसके बदले वह भगवान राम के जन्म स्थान अयोध्या जाना चाहती थी। मधुकर ने उसे चुनौती दी कि वह अयोध्या से राम को ले आये। रानी ने इसे गंभीरतापूर्वक लिया। वह अयोध्या में एक वर्ष रहकर प्रार्थना करती रही।

एक रात भगवान राम रानी के सपने में प्रकट हुए और साथ चलने के लिए इस शर्त पर राजी हुए कि मंदिर में उनकी पूजा राजा राम के रूप में हो, भगवान राम के रूप में नहीं। रानी सहमत हो गई। और शीघ्र ही सपने में प्रकट हुए राम की प्रतिमा भी उन्हें मिल गई।

शर्त के मुताबिक मधुकरशाह और रानी गणेश ने ओरछा में राजा राम के रूप में प्रतिमा की प्रतिष्ठापना की। यह भारत में एक मात्र मंदिर है जहाँ भगवान की पूजा राजा के रूप में होती है।

बिहार की एक लोक कथा

बिहार हमारे देश के उत्तरी-पूरबी भाग में बसा हुआ है। प्रदेश का नाम 'विहार' शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ होता है बौद्ध मठ। कई शताब्दी पहले बिहार बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था।

लुम्बिनी में जन्मे बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध को बोध गया में ज्ञान प्राप्त हुआ था, जहाँ उन्हें निर्वाण की भी सिद्धि हुई थी। बौद्ध धर्म और शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण स्थान सम्राट अशोक की राजधानी पाटलीपुत्र था। अभी उस नगर को पटना कहा जाता है, जो बिहार प्रदेश की राजधानी है।

बिहार का क्षेत्रफल ९४ हजार १६३ वर्ग कि.मी. है और देश का नौवां सबसे बड़ा राज्य है। यहाँ की जनसंख्या ८ करोड़ २८ लाख ७८ हजार ७९६ है और यह देश का दूसरा सबसे घनी आबादी का राज्य है। यह उत्तर में नेपाल, पश्चिम में उत्तर प्रदेश, पूरब में बंगाल और दक्षिण में नये राज्य झारखंड से घिरा हुआ है। यहाँ की राजभाषा हिन्दी है। यहाँ कई बोलियाँ प्रचलित हैं जिनमें अधिक महत्वपूर्ण हैं - भोजपुरी और मैथिली।

बलवान और बेवकूफ़ पिशाच

सीतापुर गाँव में बलवान नाम का एक बहादुर और चतुर पहलवान रहता था। वह पूरे ज़िले का सबसे अच्छा पहलवान था। आसपास का कोई पहलवान उसे पराजित नहीं कर सकता था। वह जल्दी ही घमण्डी हो गया।

एक दिन जब ग्रामीण बाजार में गपशप के लिए इकट्ठे थे तब बातों-बातों में डर के बारे में चर्चा होने लगी। बलवान ने घमण्ड के साथ कहा, मैं किसी से नहीं डरता, भूतों और राक्षसों से भी नहीं।''

ग्रामीण शीघ्र ही उसकी डींग से ऊब गये। "क्या पिशाचों से भी नहीं? क्या तुम पानी गंज की घाटी वाले पिशाचों का मुकाबला कर सकते हो?" उन्होंने पूछा।

बलवान ने उत्तर दिया, "मुझे उस क्षेत्र की धुंधली-सी याद है, लेकिन वहाँ कोई पिशाच देखा हो, ऐसा कुछ स्मरण नहीं है।

एक वृद्ध व्यक्ति ने समझाया, "तानपुर और रामपुर शहर के बीच में पानीगंज की घाटी है। और मार्ग बहुत भयानक है। यह पथरीला और कण्टकाकीर्ण है और गहरे खड्डों और सुरंगों से होकर जाता है। कुछ स्थानों पर शिखर से बड़े-बड़े शिलाखण्ड ऐसे खतरनाक ढंग से लटके होते हैं मानों किसी क्षण बटोहियों पर गिर पड़ेंगे।"

"खतरनाक मार्गों और शिलाखण्डों को आसानी से देख लूँगा।" बलवान ने कहा।

"लेकिन तुमने अभी पूरी कहानी सुनी नहीं। घाटी में खतरा मुख्यतः अलौकिक सत्ताओं से है, प्राकृतिक संकटों से नहीं। पिशाच बड़े भयानक प्राणी होते हैं और वहाँ जानेवाले मानवों को मारकर उनका मांस और रक्त खा-पी जाते हैं। तथा उनकी मूल्यवान वस्तुएँ लूट भी लेते हैं।" एक फल-विक्रेता ने कहा।

"और ये पिशाच इच्छानुसार कोई भी रूप ग्रहण कर सकते हैं, इसलिए अनुमान करना कठिन है कि वे पिशाच हैं!" एक कुंभकार ने कहा।

बलवान ने उन्हें चुनौती देते हुए कहा, "ओह! यह सब गप्प है! मैं इस घाटी में जाऊँगा और पिशाच से कुश्ती लड़ूँगा। और तब पिशाच के ठीक-ठीक विवरण के साथ लौटूँगा। और पहले पहल जिस पिशाच से मैं मिलूँगा उसे बेवकूफ भी बनाना चाहता हूँ।"

दूसरे दिन बलवान घाटी की ओर चल पड़ा। जाते समय उसकी पड़ोसिन एक बूढ़ी औरत उसके ललाट पर टीका लगाती हुई बोली, "भगवान तुम्हारी रक्षा करे। यह अण्डा और नमक की पोटली रख लो। संकट के समय उपयोगी होंगे।"

जैसे ही वह घाटी में गया, उसका नाम लेकर किसी ने पुकारा, "अरे ओ बलवनवा! तुझे यहाँ देखकर अच्छा लगा। मैं तुम्हारा दोस्त गब्बर हूँ। यहाँ आ जाओ, हम लोग कुछ देर गप्पशप्प करेंगे।"

बलवान को यह समझने में देर नहीं लगी कि यह पिशाच बोल रहा है। वह तुरंत सावधान हो गया। उसने कहा, "कहाँ हो तुम गब्बर? मैं तुम्हें देख नहीं सकता।"

पिशाच, क्योंकि वह पिशाच ही था, गब्बर का रूप लेकर शीघ्र उसके पास आ गया।

बलवान ने कहा, "आह ! पिशाच ! आखिर तुम मिल ही गये। और गब्बर का रूप बनाकर आये हो? है न? तुम्हें मालूम है न मैं यहाँ क्यों आया हूँ?"

पिशाच चकित रह गया। उसने किसी मानुस को उसे इस प्रकार संबोधित करते हुए पहले कभी नहीं देखा था। "मुझे क्या मालूम कि तुम यहाँ क्यों आये हो?" पिशाच ने उत्तर दिया।

"ओह ! तब तो तुम बेवकूफ पिशाच हो। तुम मानव मन को नहीं पढ़ सकते। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि मैं मल्लयुद्ध विजेता हूँ। मैंने जानवरों को निगल जानेवाले मगरमच्छों को मारा है और आदमखोर शेरों को भर्ता बना दिया है। अब मैं कुछ पिशाचों की हड्डी-पसली एक करने आया हूँ।" बलवान ने समझाया।

पिशाच ने उसे नख से शिख तक देखा और कहा, "लेकिन तुम बहुत शक्तिशाली तो नहीं दिखाई देते !"

बलवान ने उत्तर दिया, "बाहरी आकृति धोखा दे सकती है। खुद को देख लो। तुम दिखाई पड़ते हो गब्बर की तरह परंतु हो नहीं। अब देखो !" उसने जमीन पर से पत्थर का एक टुकड़ा उठाते हुए कहा। यह सूखा दिखाई देता है। परंतु इसे दबाओ तो तरल पदार्थ निकल आयेगा।"

पिशाच ने एक पत्थर उठाया और दोनों हाथों

नालन्दा विश्वविद्यालय

नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना ईसा पूर्व पाँचवीं शताब्दी में गुप्त सम्राटों द्वारा की गई थी। विद्याध्ययन की एक महत्वपूर्ण संस्था के रूप में इसका विकास हुआ। वहाँ के पाठ्यक्रम में बौद्ध धर्म के शास्त्र (महायान और हीनयान दोनों के सिद्धान्त), वेद, हेतु विद्या (तर्क शास्त्र) शब्द विद्या (व्याकरण) तथा चिकित्सा विद्या (दवा) सम्मिलित थे।

विश्वविद्यालय में हजारों छात्र और अध्यापक थे। यहाँ दूर देशों से छात्र पढ़ने आते थे। इनमें सबसे प्रसिद्ध छात्र था चीनी बौद्ध यात्री ह्वेन सांग। इसे सम्राट हर्षवर्द्धन और पाला वंश का भी संरक्षण प्राप्त था।

से कस कर दबाया, किन्तु कुछ नहीं हुआ। उसने कहा, "असम्भव!"

बलवान ने हाथ के पत्थर को जेब के अण्डे से बदल लिया जिसे पिशाच ने नहीं देखा। उसने कहा, "अब यहाँ देखो! मैं इस पत्थर को दबाऊँगा और इससे तरल पदार्थ निकलेगा।"

उसने हाथ के अण्डे को दबाया और पीला और सफेद तरल पदार्थ उसकी उंगलियों से बहने लगा।

पिशाच ने तरल पदार्थ को देखा। वह प्रभावित हो गया। उसने बलवान को जेब से नमक निकालते नहीं देखा।

फिर बलवान ने जमीन पर से एक कंकड़ उठाया। "क्या तुम इस कंकड़ को हाथ से मसलकर नमक बना सकते हो?" उसने पूछा।

"नामुमकिन," पिशाच ने कहा।

"कितनी शर्म की बात है कि मैंने तुम्हें अपने बराबर का समझा और तुमसे मल्लयुद्ध करने का निश्चय किया।" बलवान ने टिप्पणी की और अपनी दोनों तलहथियों को दबाया मानों कंकड को मसल रहा हो। उसने सावधानी से कंकड़ को जेब में डाल लिया और अपने हाथ का नमक पिशाच को दिखाया। "अब इसे चखो। क्या यह नमक नहीं है?" उसने कहा।

पिशाच ने उसे चखा और भयभीत हो गया। "यह कोई मामूली आदमी नहीं है?" उसने मन ही मन सोचा।

बलवान ने अपने मन की बात बतायी : "मैं तुम्हें अपने गाँव ले चलना चाहता हूँ। मेरे गाँववालों ने कभी पिशाच नहीं देखा। क्या मेरे साथ कल चल सकते हो?"
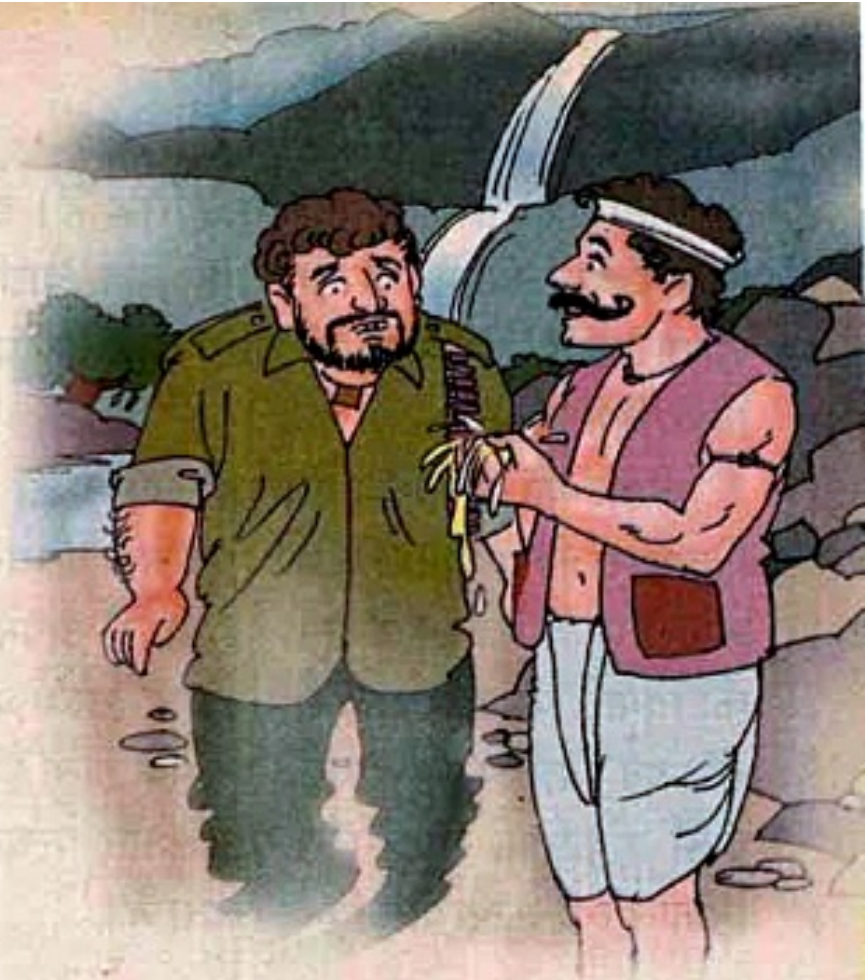
पिशाच ने सोचा, 'इसे हम घर ले चलते हैं और जब यह सोता रहेगा तब इसका सिर कुचल देंगे।'

उसने बलवान से कहा, "मैं कई ऐसे पिशाचों को जानता हूँ जो तुम्हारे साथ तुम्हारे गाँव जाने को इच्छुक होंगे। कृपया मेरी गुफा में रात गुजार लो और कल कुछ पिशाचों को साथ लेकर गाँव लौट जाना।"

बलवान ने उसका आतिथ्य स्वीकार कर लिया। "मुझे धोखा देने की कोशिश न करना। मैं कंकड़ में नमक देख सकता हूँ और तुम्हारा दुष्चक्र भी शीघ्र ही पता लगा लूँगा।"

पिशाच ने वचन दिया कि वह ठीक से बर्ताव करेगा और उसे अपने घर ले गया। उसका 'घर' एक गुफा था जिसमें यात्रियों से लूटे हुए धनसे लबालब भरी कई कोठरियाँ थीं। बलवान ने बहुत-सी हड्डियाँ और खोपडियाँ भी देखीं। उसने सोचा

हस्तकला

बिहार की हस्तकला बहुत प्रसिद्ध है। इसके लिए पत्थर, लकड़ी, चमड़ा, धातु, वस्त्र, वारनिश, शीशा आदि अनेक प्रकार के पदार्थों का प्रयोग किया जाता है।

बिहार की सर्वाधिक प्रसिद्ध लोक कला है - चित्रकला की मधुबनी शैली। इस कला में परम्परागत रूप से राज्य की स्त्रियाँ लगी हुई थीं जो अपने घरों की दिवारों पर और आंगनों में चित्र बनाया करती थीं। इन चित्रों का मूल विषय धार्मिक होता है और इनमें प्राकृतिक स्रोतों जैसे पौधों और पत्थरों से निकाले रंगों का प्रयोग किया जाता है।

कि ये मानव मांस के उसके भोजन के बचेखुचे अवशेष हैं।

पिशाच ने सबसे अच्छे आचरण का दिखावा किया। उसने रात्रि भोज कराने का प्रस्ताव रखा। लेकिन बलवान ने कहा, ''मैं दिन में एक ही बार खाता हूँ और यात्रा आरम्भ करने के पहले वह कर चुका हूँ। लेकिन तुम्हारा दिल रखने के लिए केवल एक मुट्ठी चावल खा लूँगा।''

पिशाच ने कहा, ''मैं चावल पकाने के लिए लकड़ी लाने जाता हूँ। तुम बाहर के झरने से बोतल में पानी भर कर ले आओ।''

बलवान बोतल उठाने में असमर्थ था।वह अनेक गायों के चमड़े से बनी बहुत विशाल थी। उसे आश्चर्य हुआ, ''यदि मैं इसे खाली नहीं उठा सकता तो पानी भरने पर कैसे उठा सकता हूँ? मुझे पानी लाने के लिए कोई और उपाय सोचना होगा।''

उसने तब झरने से रसोई घर तक सुरंग बनाना शुरू किया। पिशाच उसे देखकर चिल्लाया, ''क्या कर रहे हो? मैंने तो सिर्फ पानी लाने के लिए कहा था।''

''ओह! मैं तो दर्जनों बोतल में पानी ला सकता हूँ। लेकिन मैं तुम्हारे आतिथ्य की प्रशंसा में एक स्थायी उपहार छोड़ जाना चाहता हूँ। इसलिए तुम्हारी गुफा में आसानी से पानी लाने के लिए सुरंग खोद रहा हूँ।'' बलवान ने उत्तर दिया।

पिशाच परेशान-सा हो गया। पहलवान को मारने की मेरी योजना का क्या होगा? उसने कहा : ''ओह! धन्यवाद! लेकिन अब और आगे कुछ करने का कष्ट न उठाओ। मैं इसे पूरा कर लूँगा। तुम खाना खाने के बाद जल्दी सो जाओ।'' बलवान को संदेह हो गया कि पिशाच के मन में कोई छिपा अभिप्राय है।

रात्रि भोजन के बाद वे सो गये। पिशाच जल्दी ही सो गया। बलवान ने अपने बिस्तर पर तकिया रखकर ढक दिया और किसी खतरे की आशंका से वह कहीं छिप गया।

भोर में पिशाच उठा और बलवान के बिस्तर के निकट जाकर जोर से प्रहार किया। उसने कोई कराह भी नहीं सुनी। आश्वस्त होने के लिए कि पहलवान मर चुका है, पिशाच ने उस पर छः प्रहार और किये। तब वह अपने बिस्तर पर लौट आया।

शीघ्र ही बलवान पिशाच के पास जाकर बोला, ''दोस्त ! लगता है कि तुम्हारे घर में बहुत खटमल हैं। मुझे अभी-अभी सात खटमलों ने काटा है।''

पिशाच स्तंभित रह गया। उसने सोचा था कि पहलवान मर चुका होगा, परंतु वह अभी उससे बात कर रहा है। आश्चर्य तो और इस बात की है कि वह उसके प्रहारों को मामूली खटमल का काटना समझ रहा है। ''यदि मनुष्यों का यह हाल है, तो हम पिशाचों का क्या होगा?'' पिशाच ने सोचा और डर के मारे चीखता हुआ गुफा के बाहर चला गया।

बलवान ने रामपुर से कुछ घोड़े भाड़े पर लिये और वह गुफा की सारी दौलत अपने गाँव ले गया। कुछ दौलत उसने उस बूढ़ी औरत को दिया जिसके अण्डे और नमक के मामूली उपहारों ने उसके जीवन की रक्षा की।

बलवान को लोगों ने अपने दोस्तों के सामने पिशाचों का वर्णन करते देखा। परंतु उसने फिर कभी घमण्ड नहीं कियां। वह भगवान का कृतज्ञ था कि उसे एक पिशाच मिल गया था - एक बेवकूफ-सा पिशाच !

दर्शनीय स्थल

बोध गया वह स्थान है जहाँ भगवान बुद्ध को निर्वाण की सिद्धि मिली थी। जिस वृक्ष के नीचे उन्होंने ध्यान किया था, उसे बोधि वृक्ष कहते हैं। बोध गया का मंदिर और पुरातत्व विभाग का अजायब घर दर्शनीय स्थल हैं।

पर्यटकों की रुचि का दूसरा स्थान है - राजगीर। पहाड़ियों और जंगलों से घिरा यह एक सुरम्य स्थान है। बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के पश्चात यहाँ पाँच वर्ष बिताये थे। यह स्थान जैन धर्मावलम्बियों के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनके २४ तीर्थंकरों ने यहाँ के आसपास की पहाड़ियों पर तपस्या की थी।
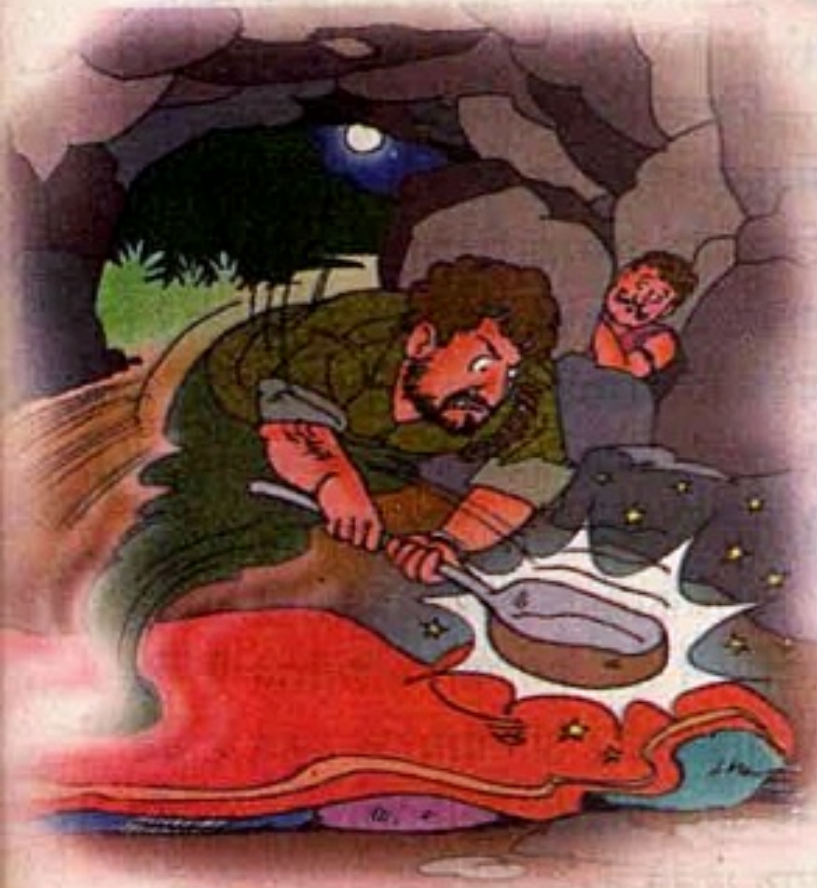
समाचार झलक

आईने ने बचाई जान

लखनऊ चिड़िया घर के अधिकारी चिन्ता में थे। सन्नी और चीना हमेशा चिड़चिड़ा और उदास रहते थे और पर्यटकों के सामने चेहरा लटकाये रहते थे। कारण : ये दो विशाल चिंपैंजी अपने अपने बाड़े में अकेले रहते थे। इनके रखवालों ने समाधान ढूँढ़ने के लिए बहुत माथापच्ची की। और अन्ततः एक प्रयोग करने का निश्चय किया। उन्होंने उनके बाड़ों में बड़े आकार का एक-एक आईना रख दिया।

चिंपैंजियों ने नींद खुलने पर अपने-अपने बाडे में एक-एक नया साथी पा लिया। जब ये सिर खुजलाते तो उनके साथी भी सिर खुजलाते। यदि ये अपनी बायीं टांग उठाते तो दूसरे अपनी दायीं टांग उठाते। जब ये मुस्कुराते तो वे भी इन पर मुस्कुरा देते। यह सचमुच सन्नी और चीना के लिए मनोरंजक था। अब ये उदास नहीं थे और पर्यटकों को उन्हें प्रमुदित देखकर खुशी होती थी।

पालतू या फालतू

निश्चय ही ब्रिटिश कोलम्बिया के केलोवना में कूप्स परिवार के लिए यह पालतू प्राणी है; किन्तु बाल-कल्याण विभाग समझता है कि यह पीड़क जन्तु है और खतरनाक हो सकता है। यह ५ मीटर लम्बा अजगर है जो यहाँ ५ वर्षों से ९ बच्चों के समेत अपने परिवार के साथ रह रहा है, जिसमें सबसे छोटा बच्चा दो साल का है।

अधिकारीगण बच्चों की सुरक्षा को लेकर सशंकित हैं। कूप का आश्वासन है कि अजगर स्नेही है और प्रायः ही स्कूल के बच्चे जब अपने घर आते हैं, निर्भय होकर उसके साथ खेलते हैं।

विघ्नेश्वर

पार्वती पल भर में अपने दुख को भूल गई, अपने पुत्र को गोद में लेकर नज़र उतारी। शिवजी ने अपने दोनों हाथ बढ़ा कर शिशु को पुकारा। विघ्नेश्वर डगमगाते कदमों से शिवजी की तरफ़ जाने लगा, इस पर सब लोग उसकी इस प्रिय चेष्टा पर मुग्ध हो गये।

"बेटा विघ्नेश्वर, तुम्हें पुत्र के रूप में पाकर हम धन्य हो गये। हे चिरंजीव!" यों कहकर शिवजी ने उसे चूम लिया। इस पर विघ्नेश्वर झट नीचे कूदकर बोला, "पिताजी, आप यह क्या कह रहे हैं? मैं तो आपका पुत्र हूँ। सचमुच मैं धन्य हो गया हूँ।" यों कहकर विघ्नेश्वर ने अपनी छोटी सी सूंड बढ़ाकर पार्वती और परमेश्वर के चरणों को लपेट लिया, उन्हें आँखों से लगाकर प्रणाम किया। इस के बाद उसने विष्णु को प्रणाम किया।

विष्णु ने कहा, "आओ, मेरे भांजे।" और उसे अपने निकट लेकर आशीर्वाद दिया, "कल्याणमस्तु।"

उस वक़्त विष्णु की कांति में विघ्नेश्वर नीलाकाश के रंग में दिखाई पड़ा। सब को ऐसा प्रतीत हुआ कि विष्णु तथा विघ्नेश्वर के बीच कोई समानता है। वही मामा की आकृति की समानता थी।

इसके बाद विनायक ने ब्रह्मा को प्रणाम किया। ब्रह्मा ने उसके गालों पर चुटकी देते आशीर्वाद दिया, "हे गणपति, तुम सब लोगों से प्रथम पूजा प्राप्त करो।"

फिर विघ्नेश्वर ने लक्ष्मी तथा सरस्वती को प्रणाम किया। उन दोनों ने विघ्नेश्वर को गोद में लिया। तब बोलीं, "हम सास-बहू के झगडे

छोड़कर विघ्नेश्वर के दोनों तरफ़ इसी प्रकार मैत्री भाव से रहेंगी।'' फिर पार्वती को देख बोलीं, ''पुत्र गणपति ने इसके पहले बताया है कि हम तीनों माताएँ एक ही माँ से पैदा हुई हैं ! इसके बाद हम तीनों अलग-अलग रूप से याने क्षीर सागर से लक्ष्मी, ब्रह्मा की जिह्वा से सरस्वती के रूप में वाणी, पहले दक्ष की पुत्री सतीदेवी के रूप में उमा बन कर अवतरित हुई हैं ! जयलक्ष्मी नामक सिद्धि, विद्यावती नामक बुद्धि विनायक की पत्नियाँ हैं। अब हमें विघ्नेश्वर के विवाह का वैभव देखना बाकी रह गया है।''

इस पर लक्ष्मी बोली, ''मैं लक्ष्मीकर बने हुए विघ्नेश्वर पर विश्वास करनेवालों के बीच स्थाई रूप से रहूँगी। सिद्धि स्वरूपिणी जयलक्ष्मी मेरी ही अंश है और जो विनायक की पत्नी बनने जा रही है।''

सरस्वती ने कहा, ''विघ्नेश्वर ज्ञान प्रदाता हैं और विज्ञानदायक हैं। वर्णमाला का अभ्यास कराने के पूर्व बच्चों के द्वारा हल्दी के ढेले याने विघ्नेश्वर की पूजा करा कर ॐ नमः लिखना होगा। मेरी अंशवाली विद्यावती बुद्धिरूपिणी है, जो विनायक की नायकी याने पत्नी है।''

इस पर विघ्नेश्वर ने अबोध जैसा चेहरा बनाकर और सबकी ओर एक बार दृष्टि दौड़ा कर कहा, ''आप लोग देख रहे हैं न? बड़ों का यह व्यवहार कैसा है? विवाह करके ये लोग जो यातनाएँ झेल रहे हैं, वे यातनाएँ बच्चे भी झेल लें, इस विचार से जल्दी मचा रहे हैं, चैन से उन्हें रहने भी नहीं देते। तिस पर माताओं के लिए तो और जल्दी आ पड़ी है।''

ये बातें सुन विष्णु बोले, ''अरे भोले ! ऐसी बात नहीं है ! अणिमा आदि सिद्धियों तथा आठ प्रकार के ऐश्वर्यों के लिए मूल बनी सिद्धियाँ आठ हैं ! वे सुंदर नक्षत्र बनकर पूर्ण चन्द्रमा की सेवा होते के समान उनके द्वारा तुम्हारी सेवा होते हमें देखने की जल्दी है ! यह हमारा उतावलापन है !''

विघ्नेश्वर ने कहा, ''ऐसी बात है ! आप कृष्णावतार के समय अष्ट महर्षियों के साथ यातनाएँ झेलते आनंद लूट सकते हैं।''

विष्णु ने मंदहास करते हुए कहा, ''तुम्हारा वचन सदा सत्य होता है, पर तुम्हें दस वधुओं के साथ विवाह करना ही पड़ेगा।''

''तब तो कहावत है न, विघ्नेश्वर की शादी में एक हजार विघ्न हैं, इसके अनुसार मुझे ही विघ्न पैदा करने होंगे।'' विघ्नेश्वर ने कहा।

''हज़ार नहीं, एक करोड़ विघ्न भले ही पैदा

हो जायें, विघ्नेश्वर का विवाह रुकेगा नहीं।'' यों ब्रह्मा के स्वर में स्वर मिलाकर सबने कहा।

इस पर नारद ने आगे बढ़कर कहा, ''हे विघ्नेश्वर! आप तो वाचालता में मुझसे बढ़ गये हैं! लेकिन विवाह से बचना किसके लिए संभव है? मैं गृहस्थी चलाना नहीं जानता, इसीलिए मुनि बनकर भटक रहा हूँ! हे ज्ञानेश्वर, श्रेष्ठ पुरुषों ने बताया है कि विवाह और कर्त्तव्य करना पुरुषों के लक्षण हैं। इसी सत्य को मानकर पुरुषोत्तम तथा आदि देवता कहलाने वाले सभी लोग विवाह करके सृष्टि, स्थिति, लय आदि कर्त्तव्य निभा रहे हैं! अब आपकी और मेरी बात क्या कहें?''

इसके उत्तर में विघ्नेश्वर ने हँसकर कहा, ''ओहो, आप भी विवाह के पीछे पागल मालूम होते हैं! स्वयंवरों में भी शायद भाग लेते होंगे।''

''मैं अपने को त्रिकालवेदी मानता हूँ, तो आप अनंतकालवेदी हैं। वाचालता में आपके बाद ही मेरा नंबर आता है। सबकी जन्म कुंडलियाँ आपके हाथों में सुरक्षित हैं। आपको अगर भुला दे तो कोई श्रेष्ठ ज्योतिष भी सफल न होगा! हम दोनों वाचाल हैं! तर्क करने लग जाते हैं, यह सारा अनंतकाल भी हमारे लिये पर्याप्त न होगा! पर आप तो पूर्ण ज्ञानी हैं। मुझ जैसे अधकचरे ज्ञानी चाहे जिस किसी प्रकार के पागलपन में भले ही फंसें, मगर आप जैसे लोग कमल पर ओस कण की भांति किसी के अधीन नहीं होते! आप तो माया से अतीत हैं! इसीलिए सिद्धि, बुद्धि तथा अष्ट सिद्धियाँ आपको वर लेती हैं! अतः मेरे भी मुँह से श्रीरस्तु, शुभमस्तु, शीघ्र कल्याण सिद्धिरस्तु - ये शब्द निकलने दीजिए।'' यों

कहकर नारद ने महती वीणा पर कल्याणी राग का आलाप शुरू किया, फिर मंगल गीत का गान किया। इसके बाद सभी देवता अपने अपने निवासों को लौट गये। तब शिवजी विघ्नेश्वर तथा पार्वती को साथ लेकर अपने निवास कैलास को चले गये। नारद सीधे वज्रदंत के यहाँ गये।

थोड़े दिन पहले वज्रदंत की पूंछ पकडकर पुत्र गणपति ने फेंक दिया था। नीचे गिरने की वजह से उसके बदन में जो चोट लगी, उसका दर्द अभी बना रहा। धवला अपने पति वज्रदंत की सेवा में लगी थी। वह नारद को देख यह सोचते हुए घर के अंदर चली गई कि न मालूम ये महाशय फिर से कौन सा झंझट पैदा करेंगे।

नारद मूषिकासुर वज्रदंत से बोले, ''तुम्हारा अपमान करनेवाले गणपति इस समय विघ्नेश्वर के रूप में शोभायमान हैं।''

अपमान की आग में सुलगने वाला वज्रदंत भौचक्का रह गया और बोला, ''हे नारद ! अब मुझे क्या करना होगा?''

''वर प्रदान करनेवाले देवता ब्रह्मा तो हैं ही ! बज्र को बज्र के साथ ही तोड़ना होगा ! प्रतिकार लो ! गणपति ने इस समय विघ्नेश्वर का नाम धारण किया है !'' यों कहकर नारद चुपके से खिसक गये।

इस महाश्वेता नामधारिणी धवला ने बज्रदंत को अनेक प्रकार से समझाया, फिर भी उसकी बातों पर ध्यान न देकर वज्रदंत बोला, ''महाश्वेता ! तुम्हारे सौभाग्य से मुझे मौत का कोई डर नहीं है। अपने अपमान का प्रतिकार करके मुझे शांति प्राप्त करने दो।'' यों कहकर बज्रदंत ने भयंकर तपस्या की और ब्रह्मा को प्रसन्न किया। ब्रह्मा ने पूछा, ''तुम और क्या चाहते हो?''

''विघ्न को कोई रूप प्रदान कर उसे मेरे आज्ञानुवर्ती बना दीजिए।'' मूषिकासुर ने कहा।

ब्रह्मा ने विघ्न का आवाहन करके वज्रदंत के सामने खड़ा किया। पर उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। इस पर ब्रह्मा ने उसे सूक्ष्म दर्शन की दृष्टि प्रदान की। साधारण आँखों को न दिखाई देनेवाला विघ्न काले सूक्ष्म कृमि के रूप में उसे दिखाई पड़ा।

मूषिकासुर ने आश्चर्य में आकर पूछा, ''भगवन, यह क्या? इस किरकिरे को मैं क्या कर सकता हूँ?''

ब्रह्मा मंदहास करके बोले, ''यह विघ्नबीज आँखों को न दीखनेवाला सूक्ष्म अणु है। जैसे सूक्ष्म कृमि के द्वारा भयंकर रोग फैल जाता है, इसी प्रकार अनर्थदायक विघ्न का कारण भले ही छोटा क्यों न हो, वह भीषण आकृति धारण कर सर्वनाश कर सकता है। यह कामरूपी है, किसी भी प्रकार का रूप धरकर अनर्थ पैदा करना उसका काम है। तुम अब जो कुछ करना चाहते हो, कर लो।''

मूषिकासुर ने विघ्न को आदेश दिया, ''तुम महान गजासुर रूप में जाकर विघ्नेश्वर का नाश करो।''

इस पर विघ्न भयंकर गजासुर का रूप धरकर महान पर्वत की भांति तलवार चमकाते आसमान में उड़ा।

उधर कैलास में विघ्नेश्वर लाड-प्यार में पले, अपने माता-पिता की अनुमति लेकर विश्वकर्मा द्वारा निर्मित महल की ओर चल पड़े। सामने से गुजरते हुए कामदेव आकृति धरकर दिखाई दिया।

विघ्नेश्वर ने आश्चर्य में आकर पूछा, "तुम तो निराकार हो, इस आकार में दिखाई क्यों दे रहे हो? बात क्या है? मैं तो भोला व्यक्ति हूँ। मुझ पर तुम अपनी धनुर्विद्या का कौशल मत दिखाओ।"

कामदेव ने विनयपूर्वक सर झुकाकर कहा, "हे गजानन, आप तो मेरे बाणों से अतीत हैं। मुझे तो परम शिव ने ही यह वरदान दिया है कि अगर मैं किसी को दिखाई देना चाहूँ तो दीख सकता हूँ। हम दोनों की आकृतियों में कई अंशों में समानता है। हम निकट के भी हैं, इसीलिए मैं आपको दिखाई पड़ा। बस, यही बात है। अगर आप वृषभ वाहनधारी शिवजी के पुत्र हैं तो मैं ग्ररुड़ वाहनधारी विष्णु का पुत्र हूँ। मुझे शिवजी ने भस्म करके जिलाया है! आपका सर काटकर आपको जीवित किया है! मेरा वाहन तोता है तो आपका वाहन चूहा है। मन को विचलित करनेवाले पुष्प बाण मेरे आयुध हैं, तो मन को नियंत्रण में रखनेवाले पाश और अंकुश आपके हथियार हैं। आपके छोटे भाई कुमारस्वामी का अवतरण होना है न? पार्वती और परमेश्वर के परस्पर अनुराग का तेज ही कुमार स्वामी के रूप में अवतरित होगा। तारकासुर का संहार होना है! इसी वास्ते तो देवताओं ने मुझे भस्म करवाया है। मैं कैलास जा रहा हूँ। मुझे आज्ञा दीजिए।"

विघ्नेश्वर ने उत्तर दिया, "कामदेव, मैं इसीलिए कैलास से उतरकर चला जा रहा हूँ। तुम अपना कार्य निर्विघ्न संपन्न करो! तुम्हारा काम सफल होगा!"

इसके बाद कामदेव अदृश्य हो पार्वती तथा शिवजी के निवास कैलास मण्डप में पहुँचा।

विघ्नेश्वर उस महल के पास पहुँचकर सिंहद्वार के समीप की एक संगमरमर की शिला पर सुखपूर्वक बैठ कर चतुर्दिक फैली प्रकृति का आनंद के साथ अवलोकन करने लगे। हिमालय के जल प्रपात मंद गंभीर ध्वनियों के साथ स री ग म का नाद कर रहे थे। उस प्रशांत समय में एक भयंकर ध्वनि सुनाई दी, ''विघ्नेश्वर नामक व्यक्ति कहाँ पर है?''

इसके थोड़े क्षण बाद महान गजासुर रूपधारी विघ्न विघ्नेश्वर के सामने आ उतरा। उस वक़्त पृथ्वी काँप उठी। गजासुर गरज उठा, ''मैं महा गजासुर हूँ! तुम यदि गजमुखधारी हो तो मैं गजकाय हूँ! मैं इस वक़्त तुम्हारा संहार करने आया हूँ!''

विघ्नेश्वर बहरे की भांति भोली नज़र दौड़ाकर बोले, ''अरे, गन्ने के टुकड़े-टुकड़े करके खाने की मेरी इच्छा हो रही है। तुम कुल्हाडी को पैनी बना दोगे तो मैं तुम्हें मोदक खिलाऊँगा।'' यों कहकर विघ्नेश्वर ने उस पर अपना परशु फेंका। इस पर गजासुर के पैर कट गये और एक पर्वत की भांति टूटकर नीचे गिर पडा। उस पर सवार हो विघ्नेश्वर उसका मर्दन करते हुए तांडव नृत्य करने लगे। तब विघ्न चिल्ला उठा, ''महानुभाव! मैं तो विघ्न हूँ! ब्रह्मा के वरदान के प्रभाव से मैं इस प्रकार गजासुर के रूप में आया हूँ। मुझे अच्छा सबक़ मिल गया है।''

इसके उत्तर में विघ्नेश्वर बोले, ''मैं विघ्नों का विनाश करनेवाला हूँ! अलावा इसके तुम इस वक़्त गजासुर हो! तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े करना अनिवार्य है! ये टुकडे तुम्हें और मुझे भी भुलावे में डालनेवालों को ही सतायेंगे। तुम कालीय नाग बन कालिंदी सरोवर में छिपे रहो। बालकृष्ण तुम्हारा मर्दन करेगा! उनके चरण-स्पर्श से तुम्हारे पापों का परिहार होगा। उत्तम नस्ल के सर्पों के फणों पर उस समय से विष्णु के चरण-चिह्न अंकित हो शोभा देंगे!'' यों कहकर विघ्नेश्वर ने परशु से विघ्न के टुकडे-टुकडे कर दिये। उसके कण सर्वत्र व्याप्त हो अदृश्य हो गये। तब विघ्न केवल अणु रूप में शेष रह गया। देवताओं ने प्रसन्न हो विघ्नेश्वर पर फूलों की वर्षा की। *(क्रमशः)*

झूलती कुर्सी

चरण बड़ा ही कुशल बढ़ई था। अपनी जवानी में वह देश भर में भ्रमण करता रहा और अंत में स्वग्राम पहुँचा। उसकी बढ़ईगिरी की सब तारीफ़ करते थे। आसपास के गाँवों में भी उसकी भरपूर प्रशंसा होती थी।

एक दिन अचानक उसे सूझा कि क्यों न एक ऐसी कुर्सी बनाऊँ, जो विचित्र भी लगे और आज तक जिसे किसी ने बनायी नहीं हो। उस कुर्सी में जो भी बैठेगा या लेटेगा, वह अगर चाहे हो तो किसी भी दिशा में मुड़ सकता है और थकावट दूर कर सकता है।

चरण इस काम में लग गया और एक महीने के ही अंदर उसने झूलती कुर्सी का निर्माण किया। एक महीने तक उसने खुद उस कुर्सी का इस्तेमाल किया। उसे अपनी सफलता पर संतृप्ति हुई। उसे लगा कि पास ही के ज़मींदार को यह कुर्सी दिखाऊँ तो अच्छे दाम पर इसे उसे बेच भी पाऊँगा।

एक दिन सबेरे वह कुर्सी को अपनी गाड़ी में लादे जमींदार के आस्थान की ओर निकला। दोपहर को उसने बरगद के एक पेड़ के नीचे गाड़ी रोक दी। वहीं उसने साथ लायी रोटी भी खा ली। घोड़े को घास भी खिलाया और निकलने ही वाला था कि इतने में आम के पेड़ों से होती हुई एक सुंदर घोड़ा-गाड़ी आयी। उस बग्घी के पीछे-पीछे दो व्यक्ति बातें करते हुए आ रहे थे। उनमें से एक लंबे क़द का था और उसकी बड़ी-बड़ी घनी मूँछें थीं। उसके हाथ में एक क़ीमती छड़ी भी थी। वह क़ीमती कपड़े पहने हुए था। उसके पीछे-पीछे आ रहा व्यक्ति नाटा था और सिर झुकाये चला आ रहा था।

- मधुसूदन गर्ग -

नाटे आदमी ने अचानक चरण की गाड़ी में पड़ी झूलती कुर्सी देखी। उसने चरण से पूछा, ''यह कुर्सी तो अजीब लगती है। क्या तुम्हारी है?''

''हाँ बाबूजी, यह झूलती कुर्सी है और बड़ी ही विचित्र भी।'' फिर उसने उसकी सारी विशेषताओं का विशद रूप से वर्णन किया। उसने यह भी बताया कि उसे तैयार करने में उसने कितनी मेहनत की। फिर कहा, ''इसे बेचने के लिए ज़मींदार के यहाँ ले जा रहा हूँ। कम से काम पाँच हज़ार रुपयों के मिलने की आशा रखता हूँ।''

''अगर ज़मींदार पाँच हज़ार रुपये देने से इनकार कर देंगे तो फिर क्या करोगे?'' लंबे आदमी ने हँसते हुए पूछा।

चरण ने कहा, ''चार हजार रुपये माँगूँगा।'' लंबे आदमी ने कहा, ''अगर इतनी रक़म भी देने से वे इनकार कर दें तो? ''तो तीन हज़ार माँगूँगा।'' चरण ने फट कहा। ''यह रक़म देने से भी वे इनकार करेंगे तो क्या करोगे?'' लंबे आदमी ने ज़ोर से हँसते हुए पूछा।

चरण को उस हँसी में कोई खासियत नज़र आयी। उसे लगा, मानों दो-तीन आदमियों ने मिलकर कोई अजीब चीज़ देखी और साथ मिलकर हँस पड़े। चरण ने विनयपूर्वक कहा, ''ज़मींदार साहब अगर दो हज़ार रुपये भी देने से इनकार करेंगे तो वापस ले जाऊँगा। जब-जब मैं विश्राम लेना चाहूँगा, कुर्सी में बैठूँगा और झूलता रहूँगा।'' इस बार ऊँचे कंद के आदमी के साथ-साथ नाटा आदमी भी हँस पड़ा। फिर वे दोनों घोड़े की बग्घी में बैठकर चले गये।

उस दिन शाम को चरण जमींदार के आस्थान तक पहुँचा। क़िले के पहरेदारों ने उसे अंदर जाने दिया। उसे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि उन्होंने उससे कोई सवाल नहीं पूछा। उस समय ज़मींदार अपने दीवान से व दो-तीन राजकर्मचारियों से बातें कर रहे थे। उन्होंने सुंदर पगड़ी पहन रखी थी। कपड़े भी काफ़ी चमकीले थे।

ज़मींदार को देखते ही चरण थोड़ा झेंप गया।

उसे लगा, "बिना बुलाये आकर मैंने कहीं ग़लती तो नहीं कर दी। कहीं वे मुझसे नाराज़ हो जाएँ तो मैं कहीं का न रहूँगा।"

पर ऐसा नहीं हुआ। जमींदार मुस्कुराये। लगता था, उन्होंने चरण के संकोच को भांप लिया। चरण ने साहस बटोरा और कुर्सी सहित उनके पास जाकर प्रणाम किया। फिर उसने अपनी झूलती कुर्सी की विशेषताएँ बतायीं।

ज़मींदार ने ध्यान से उसकी बातें सुनीं और कहा, "तुम जैसा बढ़िया बढ़ई मेरी ही ज़मींदारी के गाँव में है, यह जानकर बड़ी खुशी हुई। इस झूलती कुर्सी को बनाने में तुमने बड़ी मेहनत की होगी। बताना, कितने में बेचने का इरादा है।"

चरण ने कहा, "पाँच हज़ार रुपये।" उसके बाद उन दोनों के बीच जो वार्तालाप हुआ, वह बिल्कुल वैसा ही हुआ, जैसे बरगद के पेड़ के नीचे हुआ था।

चरण को लगा कि ज़मींदार अव्वल दर्जे का कंजूस है। उसने अपना निर्णय सुनाते हुए कहा, "आप कम से कम इसके लिए दो हज़ार रुपये नहीं देंगे तो वापस चला जाऊँगा। इससे कम दाम में बेचने का सवाल ही नहीं उठता।"

जमींदार उसके निर्णय पर हँस पड़े। वह हँसी ठेठ वही हँसी थी, जिसे उसने बरगद के पेड़ के नीचे सुनी थी। अब यह जानने में उसे देर नहीं लगी कि लंबे कंद का वह आदमी कोई और नहीं, स्वयं ज़मींदार हैं। वह काँपते हुए कहने लगा, "मुझे माफ़ कीजिए। मैं जान नहीं पाया कि आप ही ज़मींदार हैं। प्रणाम तक न करके मैंने बड़ी भूल की। इस झूलती कुर्सी को पुरस्कार स्वरूप आपको समर्पित कर रहा हूँ।" फिर से नमस्कार करते हुए उसने कहा।

इस बार केवल ज़मींदार ही नहीं हँस पड़े बल्कि वहाँ उपस्थित सभी हँस पड़े। ज़मींदार ने चरण को दस हज़ार रुपये दिलवाये। चरण भी खुशी-खुशी गाँव लौट गया।
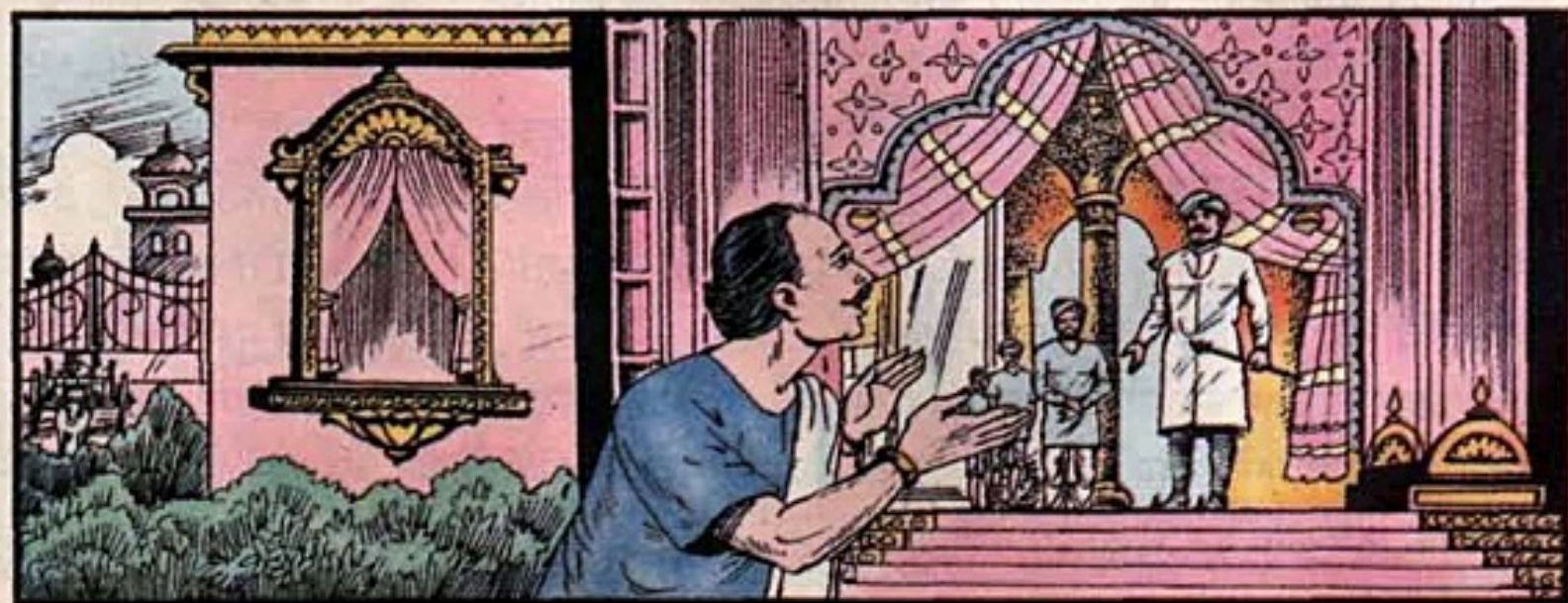
लाख अशर्फ़ियों के मूल्य का पत्थर

माधव बीस साल की उम्र का ग़रीब जवान था। दिन भर खेत में काम करने के बाद भी भरपेट वह खा नहीं पाता था। क्योंकि उसकी कमाई काफ़ी नहीं पड़ती थी। अपनें से ज़्यादा कमानेवालों को देखकर वह जलता था।

एक दिन तालाब के बाँध पर बैठे एक संन्यासी से उसकी मुलाक़ात हुई। उसने माधव से पूछा, "क्या बात है? क्यों दुखी लग रहे हो?"

माधव ने अपने मन की पूरी बात बतायी और कहा, "जितनी मेहनत करता हूँ, उतना फल पाने की मेरी इच्छा है।"

"दुनिया में जो जितनी मेहनत करते हैं, उतना फल वे पाते हैं। तब भला इस विषय को लेकर इतना चिंतित क्यों हो?" संन्यासी ने पूछा।

"क्षमा कीजिए, स्वामी ! आपका यह विचार ग़लत है। भगवान सबको उनकी मेहनत के मुताबिक़ फल नहीं देते," माधव ने कहा।

क्षण भर सोचकर संन्यासी ने कहा, "इस विषय में मेरी कोई जानकारी नहीं है। पर, तुम्हारे पास इसके समर्थन में सबूत हों तो बताना।"

"इस गाँव में गर्ग नामक एक महापंडित हैं। वे मामूली ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। उन्हीं का शिष्य भार्गव राजा के आस्थान में काम कर रहा है और वैभवपूर्वक जीवन गुज़ार रहा है। ज़िन्दगी का मज़ा चख रहा है," माधव ने एक सबूत पेश किया।

"क्या गर्ग ने राजा के आस्थान में जाने की कोशिश की?" संन्यासी ने पूछा। "नहीं, उन्हें यह गाँव छोड़कर जाना पसंद नहीं," माधव ने कहा।

"देख लिया न ! जो जितनी मेहनत करता है, उतना पाता है।" संन्यासी ने कहा। माधव ने कहा, "स्वामी, इस दुनिया में मुझ जैसे लोगों के साथ नाइन्साफ़ी हो रही है। लगता है, आप इस संबंध में कुछ सोचते भी नहीं हैं। एक समान मेहनत करने के बाद भी चंद लोगों का ही भाग्य

- सिद्धनाथ -

चमकता है। भाग्यवान अभागों के साथ अपना भाग्य नहीं बाँटते और बाँटना भी नहीं चाहते,'' माधव ने शिकायत की।

संन्यासी को माधव पर दया आ गयी और उन्होंने अपनी झोली में से एक पत्थर निकालकर उसे देते हुए कहा, ''यह बड़ा ही मूल्यवान हीरा है। इसकी क़ीमत लाखों अशर्फ़ियों की होगी। इसका फ़ायदा उठाओ और आराम से ज़िन्दगी काटो।''

माधव ने पत्थर ले लिया और संन्यासी को प्रणाम करके चला गया। एक साल के बाद संन्यासी माधव से मिलने आये। तब तक माधव की स्थिति में कायापलट हो गया। अब उसका अपना घर है, सुंदर पत्नी है, घर में काम करनेवाले नौकर-चाकर हैं और हर दिन घर में सुख-भोग के उत्सव।

पर संन्यासी को देखते ही माधव ने विनयपूर्वक प्रणाम किया और कहा, ''मेरी इस अच्छी हालत के आप ही कारक हैं। आप ही की दया से आज मैं सुखी हूँ, संपन्न हूँ।''

''हाँ, वह तो मैं देख ही रहा हूँ। भाग्य ने तुम्हारा साथ दिया। क्या मैं जान सकता हूँ कि तुम कितनों के साथ यह भाग्य बाँट रहे हो? तुम्हारे यहाँ जो काम कर रहे हैं, क्या उनमें से किसी को तुमने घर या खेत खरीदकर दिया? मैं यह जानने को बहुत उत्सुक हूँ,'' संन्यासी ने कहा।

माधव का चेहरा फीका पड़ गया और उसने सकपकाते हुए कहा, ''आपने लाखों की क़ीमत का पत्थर मुझे दिया। ज़िन्दगी का मज़ा लूटने के लिए मैं लालायित था। अपने भाग्य का अनुभव करते हुए सुख भोग रहा हूँ। भला दूसरों के बारे में क्यों सोचूँ? उसकी ज़रुरत ही क्या है?''

''तुम स्वार्थी हो। जब तुम्हारे पास कुछ नहीं था तब तुम चाहते थे कि सब तुम्हारे बारे में सोचें। वे अपना भाग्य तुम्हारे साथ बाँटें।

जब तुम्हारे पास सब कुछ है, तब तुम किसी के बारे में सोचना नहीं चाहते हो। अपना भाग्य किसी के साथ बाँटना नहीं चाहते हो। इसी क्षण से तुम्हारा भाग्य तुमसे छिन जायेगा,'' संन्यासी ने अपना निर्णय सुनाया।

''नहीं स्वामी, कृपया ऐसा मत कहिये। बिना वैभव के मैं जी नहीं सकता। मेरा यह वैभव बना रहे, इसके लिए जो भी आप कहेंगे, करूँगा।'' माधव ने बड़े ही दीन स्वर में विनती की।

संन्यासी ने इनकार कर दिया। बस, उसी पल गहनों का एक व्यापारी वहाँ आया और कहने लगा, ''माधव, तुमने जो दिया, वह हीरा नहीं, पत्थर है। उसकी कीमत एक दमड़ी भी नहीं होगी। तुम्हारा पत्थर तुम्हें लौटा रहा हूँ। मेरी लाख अशर्फ़ियाँ मुझे दे दो।''

देखते-देखते माधव की पूरी जायदाद चली गयी। वह जब अकेला रह गया तब संन्यासी ने उसे ढाढ़स बंधाते हुए कहा, ''माधव, भाग्य जब साथ देता है, तब तुम क्या करोगे, यह साबित हो गया। जो भी हुआ है, केवल भ्रम है। चिंतित मत होना। ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए जो करना है, उसकी कोशिश में लग जाओ। ईमानदारी से ज़िन्दगी गुज़ारो। जो है, उसी में संतृप्त रहना सीखो।''

''स्वामी, अब मेरी बुद्धि ठिकाने आ गयी। मुझे वह मूल्यवान पत्थर दीजिए। जीवन में आगे विवेक सहित व्यवहार करूँगा।'' हाथ जोड़ते हुए माधव ने कहा।

संन्यासी ने मुस्कुराते हुए कहा, ''अब भी क्या तुम्हारी समझ में नहीं आया? मेरे हाथ में जो पत्थर है, चाहो तो लाख अशर्फ़ियों का है, नहीं तो इसकी कोई कीमत नहीं। जब तुम तालाब के बाँध पर मुझसे मिले थे, तब खेतों में काम करते थे। तुममें सहनशक्ति हो और आग्रह हो तो आसपास की बंजर भूमि को उपजाऊ बना सकते हो। धरती पर विश्वास रखनेवालों के कारण ही फसल होती है, ढेर के ढेर अनाज उत्पन्न होते हैं। धरती सचाई है और जिसे तुम वैभव मानते हो, वह निरा सपना है।'' यों कहकर साधु ने माधव को आशीर्वाद दिया और वहाँ से चले गये।

अनुष्ठान देखते समय नरेन्द्रदेव सम्मोहित व्यक्ति की तरह बैठता है।

अनुष्ठान तांत्रिक के आह्वान से आरम्भ होता है।

राजर्षि नागबंधु महाराज की जय !

की जय !

राजर्षि की जय !

महाराज की जय !

जय !

जय ! जय ! नागबंधु महाराज !

जय ! जय !!

भक्तगण इस प्रकार नाचते हैं मानों समाधि में हों। वे एक गरुड के समान सज्जित युवक के चारों ओर नृत्य करते हैं।

युवक स्तंभित-सा दिखाई पड़ता है और चकित है कि भक्तगण अब क्या करनेवाले हैं। वे अचानक बहुत निकट आ जाते हैं।
वे सभी एक साथ पीड़ा से कराहने लगते हैं और एक-एक कर गिर पड़ते हैं। उनके हाथों के सर्प स्वतंत्र हो जाते हैं।
हा ! आह !
हा ! हा !
क्या? आह ! आह !
आह ! आह !

कुछ जन जाति नेता दौड़कर जाते हैं।
क्या सर्प मुझ पर आक्रमण करेंगे?
क्या हुआ? उठो ! उठो !
मैं अपशकुन देख रहा हूँ। अनुष्ठान को जारी नहीं रख सकते।
तांत्रिक पागल के समान क्रोधित होकर मंदिर के अंदर जाता है। कुछ भक्त उसके पीछे-पीछे जाते हैं।
कुछ गलती हो गई होगी !
क्या तुमने ध्यान दिया? गरुड़ पुरुष सुरक्षित था। कोई हानि नहीं...
नरेन्द्रदेव का वाक्य अभी पूरा नहीं हुआ था कि एक भक्त मंदिर से बाहर आता है।
अनुष्ठान बंद कर दिया गया है। हमारे महाराज चाहते हैं कि आप लोग अपनी-अपनी भेंट अग्निकुण्ड में अर्पित कर दें।

जन जाति के लोग यह देख भयभीत हैं कि सर्प भक्तों को डंस रहे हैं।
आओ! इस भयंकर स्थान से भाग चलें!
कितना भयानक दृश्य!
भागो नहीं। शांत हो जाओ। गरुड के चिंगनों को अग्निकुण्ड में छोड दो।
जैसे ही जन जाति के लोग हाथ के चिंगनों को फेंकने के लिए पंक्तिबद्ध होते हैं...
यह क्या? धरती काँप रही है!
वे भूकंप अनुभव करते हैं और इधर-उधर भागने लगते हैं। चिंगने उड़ जाते हैं।
तांत्रिक मंदिर से बाहर आता है। वह क्रोधित है।
मेरा शत्रु युवक के रूप में प्रकट हुआ है। वह अपने को गरुड बताता है।
युवक? गरुड?
क्रमशः
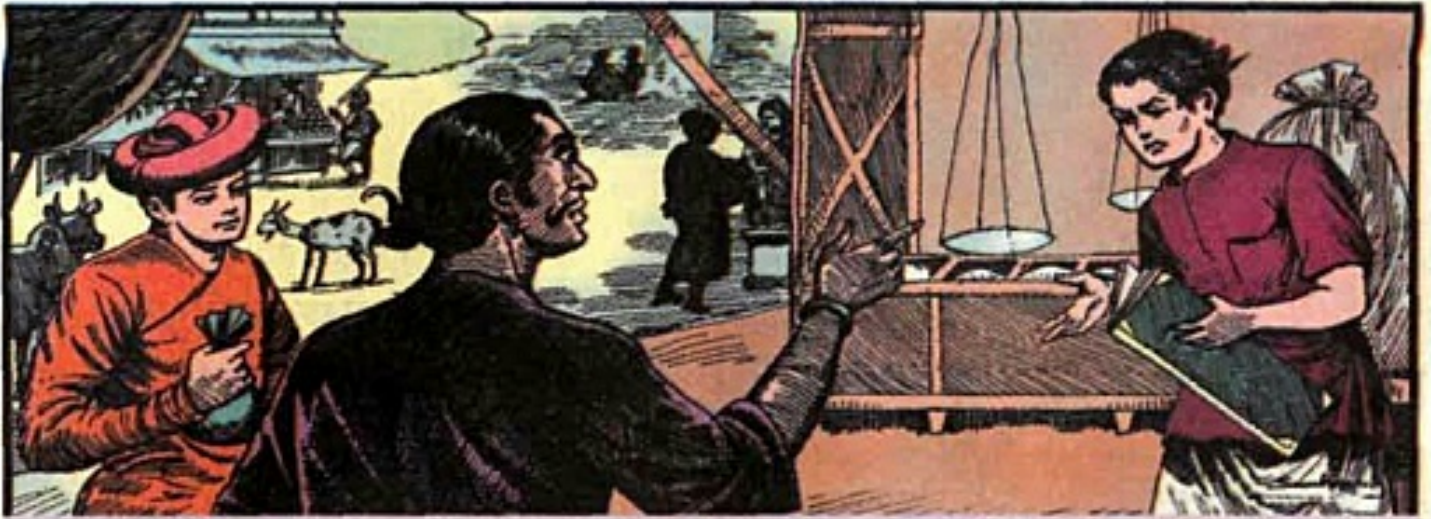
बुढ़िया का उपाय

पंडित सीताराम एक गाँव में रहता था और वहाँ के बच्चों को पढ़ा कर उनसे गुरु दक्षिणा स्वीकार करता था। कुछ दिनों के बाद उसके पास पाँच सौ रुपये इकट्ठे हो गये।

काशी में विद्वानों की एक सभा आयोजित होनेवाली थी। सीताराम को भी उसमें भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। अब वह इस पशोपेश में पड़ गया कि वह धन किसके पास सुरक्षित रखे। घर में ही रख देना चाहता था, पर उसकी पत्नी ने घर में रखने से इनकार कर दिया। उसने कहा, ''इससे ख़तरा ही ख़तरा है। मैं एक कुत्ते की तरह इसकी रखवाली नहीं कर सकती। किसी रात को चोर घर में घुस जायेंगे और इस धन के लिए मेरी जान भी ले लेंगे।''

अब सीताराम सोच में पड़ गया। वह काशीनाथ की दुकान में गया और उससे सलाह पूछी, ''तुम बताना, यह धन किसके पास सुरक्षित रहेगा?''

काशीनाथ ने ज़ोर देकर कहा, ''जहाँ तक धन की बात है, भगवान ब्रह्मा का भी विश्वास मत करना। इससे आफ़त ही आफ़त है।''

जब वे दोनों आपस में बातें कर रहे थे तब दुकान में काम करनेवाले ने तेल तोलकर एक औरत को दिया और उससे रक़म ली।

काशीराम ने पता लगाया कि वह औरत कौन है। फिर नौकर को डाँटते हुए कहा, ''बेवकूफ़, तुम्हें कितनी बार समझाया कि ग्राहकों से ज्यादा रक़म मत लो। हमें तो मिलना था केवल पच्चीस पैसों का लाभ। पर तुमने पचहत्तर पैसे अधिक ले लिये। यह तुमने अच्छा नहीं किया। ऐसी ग़लती फिर एक और बार तुमसे हो गयी तो तुम्हें नौकरी से निकाल दूँगा। जब वह औरत फिर कुछ खरीदने दुकान पर आयेगी तो वे अतिरिक्त पैसे उसे लौटा देना।''

इस घटना को स्वयं अपनी आँखों से देखकर सीताराम को पक्का विश्वास हो गया कि काशीराम

२५ वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

से बढ़कर कोई आदमी ईमानदार नहीं होगा। दुकान से जो चीज़ चाहिए, सीताराम ने वे सारी चीजें खरीद लीं और घर चला गया। फिर उसने पूरी रक़म एक थैली में भर दी और काशीराम को देते हुए कहा, ''काशीराम, लो धन की यह थैली। काशी से जब तक नहीं लौटूँगा तब तक तुम्हें ही इस धन की रक्षा करनी होगी।''

''बापरे, यह मुझसे नहीं होगा। मैं तो तुम्हारा धन छूऊँगा तक नहीं। पर हाँ, एक काम करो। मेरे घर में, जहाँ तुम चाहो, गड्ढा खोदो और यह धन की थैली उसमें गाड़ दो। लौटने के बाद फिर ले लेना।'' काशीराम ने कहा।

सीताराम को लगा कि काशीराम सचमुच नेक आदमी है। उसने उसके घर में एक गड्ढा खोदा और उसमें धन की थैली सुरक्षित रख दी। फिर वह निश्चिंत होकर वहाँ से चला गया।

काशी जाकर उसने विद्वानों की सभा में भाग लिया। स्वग्राम लौटते ही वह काशीराम के घर गया और कहा, ''मैं अपना धन लेकर जाता हूँ।''

''हाँ, हाँ! क्यों नहीं? अवश्य ले जाओ। वह तुम्हारा धन है और उस पर केवल तुम्हारा ही हक़ है। याद है न, कहाँ तुमने वह छिपाया था?'' काशीराम ने पूछा।

सीताराम ने जहाँ गड्ढा खोदा था और धन की थैली रखी थी, खोदकर देखने पर वहाँ वह थैली नहीं मिली। जब सीताराम ने काशीराम से थैली के गुम हो जाने की बात कही तो उसने कहा, ''भला उसके बारे में मैं क्या जानूँ? मैंने तो देखा तक नहीं, वह थैली तुमने कहाँ रखी?'' सीताराम को यह जानने में देर नहीं लगी कि उसके साथ धोखा हुआ है। निराश होकर वह घर लौटा।

रास्ते में सीताराम रुक्मिणी नामक एक बुढ़िया से मिला। बुढ़िया ने उसे देखते ही पूछा, ''कब लौटे बेटे? क्यों परेशान लग रहे हो? बात क्या है?''

सीताराम ने जो हुआ, सब बता दिया। रुक्मिणी ने सोचने के बाद बताया, ''बेटे, तुम्हारा पूरा धन काशीराम से उगलवाकर ही रहूँगी। पर तुम्हें मैं जैसा कहूँगी, वैसा करना पड़ेगा।'' फिर उसने उसे एक उपाय सुझाया। सीताराम उस उपाय को अमल में लाने के लिए तैयार हो गया।

इसके दो घंटों के बाद बुढ़िया दो हज़ार रुपयों के मूल्य के गहने लेकर काशीराम के पास गयी। उसने काशीराम से कहा, ''देखो बेटा, दस साल

पहले मेरा बेटा विद्याभ्यास के लिए काशी गया था। अब तक उसका कोई पता नहीं चला। मैं तो बूढ़ी हो गयी हूँ। किसी भी क्षण मर जाने की संभावना है। इसके पहले काशी गये हुए अपने बेटे का पता लगाना चाहती हूँ। मैं अकेली हूँ। इस दुनिया में मेरा अपना कोई नहीं। मेरे पास दो हज़ार रुपयों की क़ीमत के ये गहने हैं। इन्हें मैं अपने साथ ले जाऊँगी तो हो सकता है, लुटेरे मुझे लूट लें। तुम तो धर्मात्मा हो। सुना है कि काशी जाने के पहले सीताराम ने भी अपना धन तुम्हारे पास रखा था। यह भी सुना कि तुम दूसरों के धन को मिट्टी समझते हो। तुम्हारी दृष्टि में धन का कोई मूल्य ही नहीं है। जब तक मैं लौटूँ तब तक ये गहने अपने पास सुरक्षित रखना।''

काशीराम को लगा कि भाग्य उसका साथ दे रहा है। सोचा कि यह बुढ़िया अब तक इस बात से अपरिचित है कि सीताराम काशी से लौट आया है। उसने उस बुढ़िया से कहा, ''माँ जी ! अपने गहने अपने ही हाथों से मेरे घर में किसी जगह पर खोदकर रख दो। लौटने के बाद ले लेना।''

इतने में सीताराम वहाँ आया और कहने लगा, ''देखो काशीराम ! मैंने जहाँ गड्ढा खोदा था और धन छिपाया था, उसमें ग़लती हो गयी। अब असली जगह की याद आ गयी। वहाँ खोदूँगा।''

काशीराम घबरा गया। वह पसीने से तरबतर हो गया। अगर बुढ़िया को मालूम हो जाए कि उसने उसके पाँच सौ रुपये खा लिये तो वह गहने वहाँ नहीं रखेगी। इसलिए उसने सीताराम से कहा, ''तुम्हारी ही तरह मुझे भी संदेह हुआ। मैंने एक और जगह खोदी तो वह थैली जैसी थी, वैसी ही वहाँ पायी।'' कहते हुए वह अंदर गया और सीताराम की थैली उसे सौंप दी।

जैसे ही यह हुआ, बुढ़िया ने सीताराम को नख से शिख तक देखा और कहा, ''कौन? सीताराम? काशी से कब लौटे? क्या तुमने मेरे बेटे को काशी में देखा? उससे मिले?''

सीताराम ने उससे कहा, ''थोड़ी देर पहले ही लौटा। काशी में तुम्हारे बेटे से मुलाक़ात हुई। वह दो दिनों के बाद लौटने ही वाला है। तुमसे कहने के लिए कहा कि उसके बारे में तुम निश्चिंत रहो।''

''अच्छा हुआ, तुमसे भेंट हो गई। नहीं तो मैं खुद काशी चली जाती। अब तो वहाँ जाने की ज़रूरत नहीं है।'' कहती हुई वह सीताराम के साथ वहाँ से चली गयी। जो हुआ, उसे देखते हुए काशीराम निश्चेष्ट रह गया।

पिछले जन्म की बदबू

बसंत दूसरों से कर्ज लेने में माहिर है। बड़ी मीठी-मीठी बातें करके लोगों से कर्ज़ ले लेता है। शायद गाँव में एक भी नहीं बचा, जिससे उसने कर्ज़ न लिया हो। उनसे बचकर निकलना भी वह खूब जानता है।

एक बार लालू नामक किसान कर्ज़ वसूल करने उसके घर आया। उसने दरवाज़ा खटखटाया तो बसंत की पत्नी ने दरवाज़ा खोलकर पूछा, ''आपको क्या चाहिए।''

लालू ने कहा, ''मैं बसंत से मिलने आया हूँ। उसने मुझसे दो सौ रुपये लिये। दो तीन दिनों में लौटाने का वादा किया था। पंद्रह दिन हो गये, पर लौटाया नहीं और दीखता भी नहीं। आप उसे बाहर भेजिए। जब तक वह रक़म नहीं लौटायेगा, मैं यहाँ से निकलनेवाला नहीं हूँ।''

बसंत की पत्नी ने कहा, ''घर में हो तब बुलाऊँ न ! जब घर में ही न हो तो भला कैसे बुलाऊँगी?''

इस पर लालू ठठाकर हँस पड़ा और बोला, ''आपकी बातों का विश्वास कर लूँ, ऐसा बेवकूफ़ नहीं हूँ। उसे तुरंत बाहर आने को कहिए।''

''ताज्जुब है, आपको कैसे पता कि वे अंदर ही हैं।'' बसंत की पत्नी ने पूछा।

''चुरुट की बदबू जो आ रही है। इसका मतलब है कि वह अंदर ही है?'' लालू ने क्रोध-भरे स्वर में कहा।

इस पर बसंत की पत्नी ने मुस्कुराते हुए कहा, ''चुरुट की बदबू तो पीनेवाले के चले जाने के बाद भी आती है। वह बदबू तो उसमें उसके पिछले जन्म से ही है। आपको गली में आते हुए उन्होंने देख लिया और पिछवाड़े से वे चलते बने।''

लालू दाँत पीसता हुआ वहाँ से चला गया। — *मनोहर*
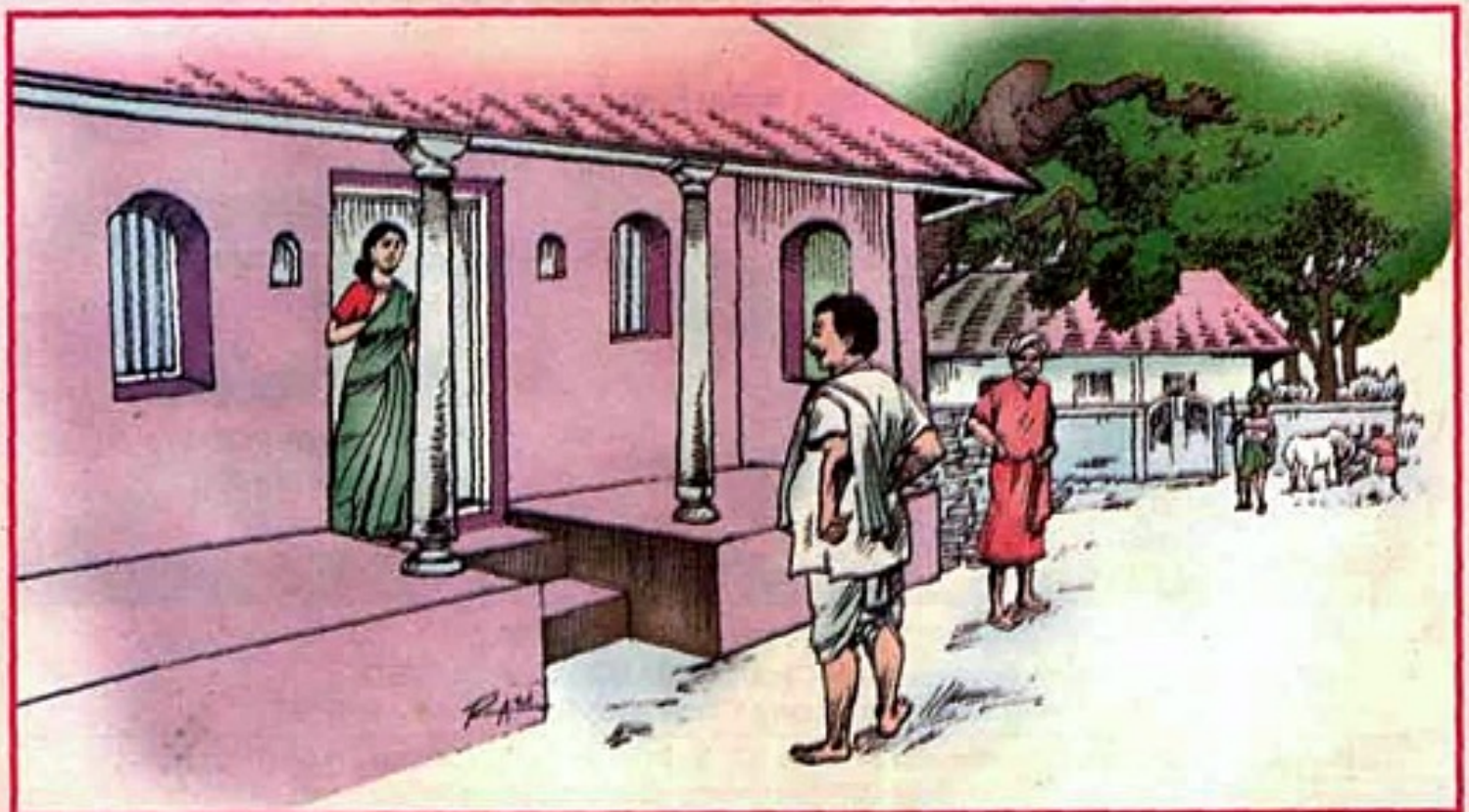
चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

मार्च अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

सागर कावरा
बी-८, खत्री एपार्टमेंट,
स्कूल रोड, मलाड (पश्चिम),
मुंबई - ४०० ०६४.

विजयी प्रविष्टि

मेरी झांकी सबसे न्यारी ।
अपनी भी पूरी तैयारी ॥

चंदामामा वार्षिक शुल्क

भारत में १२०/- रुपये डाक द्वारा
Payment in favour of CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

CHANDAMAMA (Hindi) MAY 2002 Regd. with Registered Newspaper of India No. 1087/57
Registered No. TN/Chief PMG-866/2001